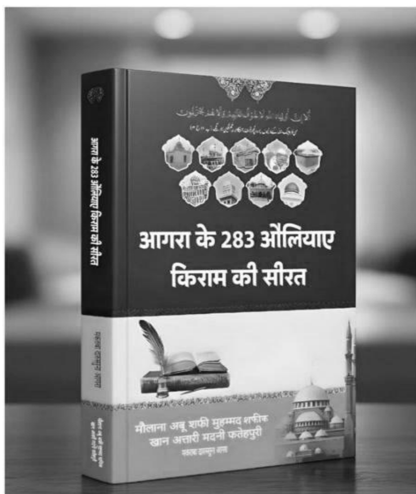
हींग की मंडी और नाई की मंडी के 17 औलियाए किराम की सीरत

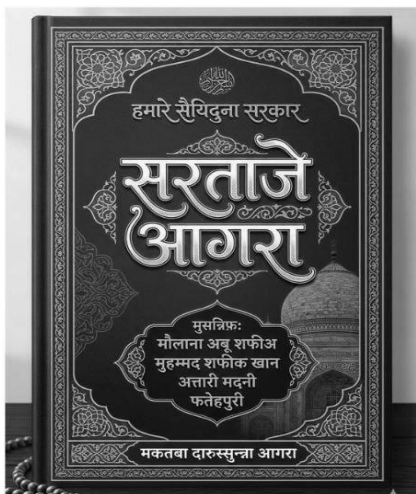
मुसन्निफ़
मौलाना अबू शफीअ मुहम्मद शफीक खान अत्तारी मदनी फतेहपुरी

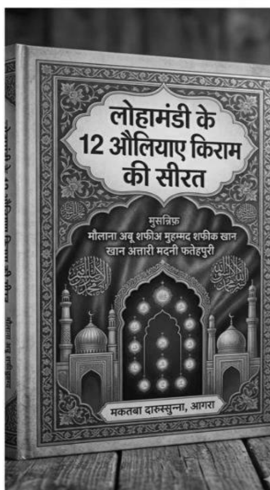


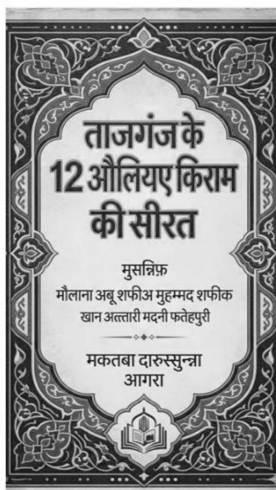
मकतबा दारुस्सुन्ना
आगरा

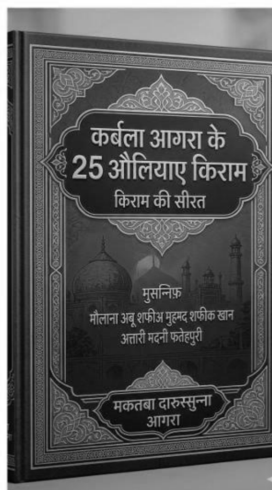
आगरा के औलियाए किराम की सीरत को आम करने में मकतबा दारुस्सुन्ना आगरा का साथ दें और शादियों, दावतों और मरहूमीन के ईसाले सवाब के लिए किताब तकसीम करवायें और औलियाए किराम के फ़ैज़ान से मालामाल हों।











किताबें हासिल करने के लिए इस नंबर पर कॉल कीजिए :8808693818

मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फतेहपुरी

मुसन्निफ़ का तआरुफ़

नाम और निस्बत

नाम **मुहम्मद शफीक़ खान**, वालिद का नाम **मुहम्मद शरीफ खान** है, सिल्सिला क़ादरिया रज़विया अत्तारिया में शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिए दा'वते इस्लामी, हज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल, **मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादरी** रज़वी से **2004 ईस्वी** में बैअ़त होने की वजह से अपने नाम के साथ अ़त्तारी लिखते है, आपकी विलादत क़स्बा ललौली जिला फतेहपुर हंसवा, सूबा यू पी, हिंद में हुई, आप की तारीखे पैदाइश **10 जून 1986 ईस्वी** है।

दीनी माहौल से वाबस्तगी और सफ़रे इल्म

हज़रत ने इब्तिदाअन हिंदी इंग्लिश की ता'लीम हासिल करके सन **2000 ईस्वी** में ऐ. सी. का काम सीखने और करने के लिये बम्बई चले गये थे और वहां पर **4 साल** क़ियाम किया फिर **2004 ईस्वी** में अपने वतन लौटे और वतन में ही उन्हें दा'वते इस्लामी का दीनी माहौ़ल मिला, दा'वते इस्लामी के दीनी माहौल से वाबस्ता होने के बाद मुख्तलिफ कोर्सेज़ किये और **2006 ईस्वी** में अपने ही इलाके के दारुल उ़लूम बनाम **जामिया अ़रबिया गुलशने मा'सूम** कस्बा ललौली में **क़ारी इक़बाल अह़मद अ़त्तारी** से क़ुरआ़ने पाक नाज़िरा और ह़ज़रत **मौलाना अ़तीक़ुर्रह़मान मिस्बाही** से **दर्से निज़ामी** के दरजए ऊला और कुछ दरजाए सानिया की किताबें पढ़ीं, इसके बाद मज़ीद ता'लीम हासिल करने के लिये **चिरैयाकोट जिला मऊ** तशरीफ ले गये और वहां दरजए सानिया मुकम्मल करने के बाद अहले सुन्नत के अज़ीम इ़ल्मी इदारे अल

जामिअ़तुल अशरफिया मुबारकपुर आ'ज़मगढ़ में मतलूबा दरजए सालिसा का टेस्ट दिया और अल्लाह पाक के फ़ज़्ल से कामयाब होने के बाद दरजए सालिसा की तालीम वहीं हासिल की, फिर दरजए राबिआ **दारुल उ़लूम ग़ौसिया** (जो जिला **आ'ज़मगढ़ के गाँव सरय्या** में वाक़ेअ़ है) में मुकम्मल की, फिर उसके बाद दा'वते इस्लामी के जामिअ़तुल मदीना, **फैज़ाने अ़त्तार नेपालगंज**,नेपाल में दाखिला लिया और दरजए खामिसा से दौरए ह़दीस तक की ता'लीम वहीं मुकम्मल फरमाई।

तदरीसो तसनीफ़ की शुरुआत

2014 में फराग़त के बाद तदरीस के लिये दा'वते इस्लामी के जामिअ़तुल मदीना **फैज़ाने सिद्दीक़े अकबर,आगरा** तशरीफ ले गये और एक साल वहां तदरीस फरमाई, फिर मज़ीद तदरीस के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी मरकज़ के हुक्म पर **बंगलादेश के दारुल हुकूमत ढाका** के जामिअ़तुल मदीना तशरीफ ले गये और वहीं पर दा'वते इस्लामी के जामिअ़ात के दरजए सानिया में चलने वाली इ़ल्मे सर्फ की किताब बनाम **मराहुल अरवाह** की उर्दू शरह़ **शाफ़िकुल मिस्बाह** और दरजए राबिअ़ा में चलने वाली इ़ल्मे नहव की किताब बनाम **शरह जामी** की उर्दू शरह़ **अश शफीकुन नोअमानी** तसनीफ फरमाई।

उसके बाद फिर जामिअ़तुल मदीना फैज़ाने सिद्दीक़े अकबर आगरा तशरीफ लाकर दरजए सानिया में चलने वाली ह़दीस की किताब बनाम **अल अरबईने नवाविय्या** की उर्दू शरह़ **शफ़ीकिया** तह़रीर फरमाई, और तब से अब तक तस्नीफात का सिल्सिला जारी है। आखिरी मालूमात के मुताबिक अब तक कुल 65 से ज़ाइद किताबें तसनीफ़ हो चुकी हैं।

खिलाफ़तो इजाज़त

25 अप्रैल 2024 ईस्वी को शागिर्दे हाफिज़े मिल्लत, मुरीदे मुफ़्तिए आज़म हिन्द, खलिफ़ए बुरहाने मिल्लत, मुबल्लिगे इस्लाम, हज़रत **अल्लामा मौलाना अब्दुल मुबीन नोअमानी** साहिब ने सिलसिलए कादरिया, रज़्विया की **खिलाफ़तो इजाज़त** से नवाज़ा।

खिदमते दीन

हज़रत जिस तरह एक **मुदर्रिस** और **मुसन्निफ़** हैं उसी तरह **मुक़र्रिर** और **मुबल्लिग** भी हैं। आप के इस्लाही बयानात खौफे खुदा व इश्क़े मुस्तफा से लबरेज़ होते हैं। सुनने वालों पर रिक्कत तारी होती और दीन से मुहब्बत नसीब होती है। मज़ीद वक़्तन फ़वक़्तन मुख्तलिफ़ दीनी तहरीकें भी चलाते रहते हैं। अभी हाल ही में **{दीन सीखो और इनाम पाओ}** के नाम से घर घर दीनी तालीम पहुँचाने की तहरीक शुरू फरमाई है। अल्लाह पाक हज़रत की इस कोशिश को अपनी बारगाह में क़बूल फरमा कर तरक्की अता फरमाये। अमीन

अल्लाह पाक से दुआ है कि मौसूफ को बे बहा बरकातो समरात से नवाज़े और इस कारहाए नुमाया को अपनी बारगाह में शर्फे क़बूलियत अ़ता करके मौसूफ के लिये तोशए आखिरत बनाए। आमीन

अज़ : अल आजिज़ मुहम्मद शादाब खान मदनी कोटा राजस्थान

मज़ारात पर हाज़िरी का तरीक़ा

सवालः औलियाए किराम रहमतुल्लाह अलैहिम के मज़ारात पर हाज़िरी का तरीक़ा क्या होना चाहिए ?

जवाबः किसी वली के मज़ार मुबारकपर हाज़िरी का तरीक़ा येह है कि अगर मुम्किन हो तो पायंती यानी क़दमों की तरफ़ से आए, चेहरा मुबारका की तरफ़ मुंह और काबे की तरफ़ पीठ कर के खड़ा हो, कमो बेश चार हाथ यानी दो गज़ दूर रहे, अगर कोई बिल्कुल क़रीब चला गया या ज़्यादा दूर रह गया तब भी कोई गुनाह नहीं है।

तिलावत और दीगर इबादात करने वाले को तशवीश ना हो इस लिए दर्मियानी आवाज़ में इस तरह सलाम अर्ज़ करे अस्सलामु अलैकुम या सय्यिदी यानी ऐ मेरे आक़ा! आप पर सलाम हो।

(فتاویٰ رضویہ،۹/ ۵۲۲ماخوذ اَز رضافاؤنڈیشن مرکز الاولیالاہور)

अब एक बार सूरए फ़ातिहा, 11 मर्तबा क़ुल हुवल्लाह शरीफ़ अव्वल व आखिर तीन तीन बार दुरूदे पाक पढ़ कर ईसाले सवाब करें, ईसाले सवाब के लिए यही पढ़ना लाज़िमी नहीं है बल्कि कुछ भी पढ़ सकते हैं मिसाल के तौर पर एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ कर भी ईसाले सवाब हो सकता है बल्कि नमाज़ें, रोज़े, हज, उमरा, नेकी की दावत, इन्फ़िरादी कोशिश, रास्ते से कोई पत्थर वग़ैरा हटा दिया ताकि मुस्लमानों को तकलीफ़ ना हो, सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शिरकत अलग़रज़ किसी भी नेक काम का ईसाले सवाब किया जा सकता है लिहाज़ा इस तरह के नेक कामों का सवाब मज़ार वाले बुज़ुर्ग की बारगाह में नज़्र कर दें, फिर वापिस होते हुए उलटे क़दमों पलटें ताकि मज़ार मुबारक को पीठ ना हो।

आगरा के औलिया का मुख़्तसर तआरुफ़

عِنْدَ ذِكْرِ الصَّالِحِيْنَ تَنَزَّلُ الرَّحْمَةُ

सालिहीन यानी नेक लोगों के ज़िक्र के वक़्त अल्लाह पाक की रहमत नाज़िल होती है।

शैख़ुल इस्लाम हज़रत अब्दुल्लाह अंसारी से मनक़ूल है कि जहां तक हो सके अल्लाह पाक के औलिया की बातें याद रखो और जो येह भी ना हो सके तो उन के नाम मुबारक ही याद रखो कि यही काफ़ी हैं।

(بوستانِ اخیار، ص۱)

हज़रत सुल्तानुल मशाइख़ शैख़ निज़ामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाह अलैह अमीर ख़ुसरु रहमतुल्लाह अलैह से अक्सर इरशाद फ़रमाया करते थे कि : ऐ ख़ुसरु! मशाइख के मलफ़ूज़ात यानी उनकी बातों को याद करो और उनका ज़िक्र किया करो, कि उनके ज़िक्र से दिल में कैफ़ीयत पैदा होती है।

(بوستانِ اخیار، ص۱)

मौलाना सैय्यिद अब्दुल वाहिद बिलग्रामी रहमतुल्लाह अलैह साहिबे सबए सनाबिल फ़रमाते हैं : सालिहीन का ज़िक्र ग़मगीन दिलों के सुकून का सबब होता है, येह बुज़ुर्गाने दीन अगरचे हमारी ज़ाहिरी निगाहों से दूर और आलमे ख़ाक से रुख़स्त हो कर बहिश्त नशीनों के हम नशीन हैं लेकिन क़ुरआने पाक के फ़रमान से अब तक ज़िंदा हैं और क़ियामत तक ज़िंदा रहेंगे जैसा कि अल्लाह पाक ने इरशाद फ़रमाया :

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِیْنَ قُتِلُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتًاؕ-بَلْ اَحْیَآءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ یُرْزَقُوْنَ ﴿۱۶۹﴾

तरजमए कंज़ुल ईमान : और जो अल्लाह की राह में मारे गए हरगिज़ उन्हें मुर्दा ना ख़्याल करना बल्कि वो आपने रब के पास ज़िंदा हैं रोज़ी पाते हैं। (پ۴، آلِ عمران،۱۶۹)

लेकिन उन बुज़ुर्गाने दीन के ज़ाहिरी तौर पर इस दुनिया से चले जाने के बाद भी हम उनकी रूहों से उसी तरह फ़ैज़ हासिल कर सकते हैं जैसा कि हम उनकी दुन्यवी ज़िंदगी में फ़ैज़ हासिल करते थे, उनके मुक़द्दस तज़किरे, उन के मुबारक कलिमात (यानी उनकी बातें) हमारी हिदायत का सबब बन सकते हैं, उनके हालात को पढ़ना, लिखना, सुनना इबादत में दाख़िल और बरकत का सबब है और उनके अहकाम व हिदायत की पैरवी नजात का सबब है, उन में वही कीमियाई असर और मक़बूलियत की तासीर मौजूद है जो साहिबे कलिमात की नज़र व ज़बान में मौजूद थी, हाँ ! नियाज़ मंदी, ख़ाकसारी ज़रूरी और अक़ीदत लाज़िमी है।

अलबत्ता जहां तक मुम्किन हो औलिया अल्लाह के मज़ारात पर ख्वाहिशाते दुन्यवी को नज़र अंदाज कर के दौलत ख़ुदा शनासी के फ़ैज़ की दुआ करनी चाहिए। आगरा शहर में कई सिलसिलों के बुज़ुर्गाने दीन मौजूद जिनकी तफ़सील येह है :

ख़ानवादए चिश्तिया के बुज़ुर्गाने दीन

ख़ानवादए चिश्तिया में शाह नेअमतुल्लाह चिश्ती, मीर अब्दुल्लाह तबरेज़ी, अब्दुल मोमिन चिश्ती, शाह मुहम्मद चिश्ती, शैख़ मुहम्मदी चिश्ती, मीर मुहम्मद सालेह कशफ़ी, शैख़ मुनव्वर चिश्ती, शाह यार मुहम्मद चिश्ती, शैख़ सिधारी चिश्ती, शैख़ ज़ैनुद्दीन चिश्ती रहमतुल्लाह अलैहिम वगैरा बुज़ुर्गाने चिश्त अहले बहिश्त का तज़्किरा इस किताब में मौजूद है।

ख़ानवादए नक़्शबंदिया के बुज़ुर्गाने दीन

मशाइख़ीने नक़्शबंदिया में हज़रत शाह अबुल उला, ख़्वाजा मुहम्मद यहया, अमीर अब्दुल्लाह, मीर मुहम्मद नोअमान, ख़्वाजा मुहम्मद मीर, मुहम्मद इब्राहीम, हाफ़िज़ अब्दुल्लाह रहमतुल्लाह अलैहिम वग़ैरा।

ख़ानवादाए शत्तारिया के बुज़ुर्गाने दीन

और मशाइख़ीने शत्तारिया में शैख़ ज़ियाउल्लाह, शैख़ अब्दुल्लाह, शैख़ बुरहान रहमतुल्लाह अलैहिम वग़ैरा।

ख़ानवादए मदारिया के बुज़ुर्गाने दीन

और ख़ानवादए मदारिया में शाह फ़ख़्रुद्दीन मदारी, मलंग शाह रहमतुल्लाह अलैहिम का तज़्किरा मौजूद है।

नक़्शबंदिया पौधे में चिश्तिया शाख़ पैवंद कर के एक जदीद शजर पुर समर इस बाग़ में तैयार किया गया है जो अबुल उलाईया के नाम से मशहूरो मारुफ़ है, इस की शाख़ें दूर दूर तक फैली हुई हैं, इस सिलसिले के बानी हज़रत शाह अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के इलावा अमीर फ़ैज़ुल उला, अमीर नूरुल उला, अमीर अब्दुल माजिद, अमीर अब्दुल मुनइम, ख़लीफ़ा अबुल क़ासिम, मुल्ला मुहम्मद उमर, सैय्यिद मुहम्मद अफ़ज़ल, सैय्यिद मुहम्मद जाफ़र, शाह फ़रहाद, शैख़ वली मुहम्मद वग़ैरा इसी फ़ल आवर दरख़्त के औलियाए किबार हैं जिनका ज़िक्रे खैर भी इस किताब में मौजूद है।

इनके इलावा और भी बहुत सारे बड़े बड़े औलियाए कामिलीन रहमतुल्लाह अलैहिम का हैं जिनके सिलसिलए मारिफ़त का पता नहीं चला, या कई कई सिलसिलों में मुंसलिक हैं, शैख़ अबुल फत्ताह, मीर अबुल गैस बुख़ारी, शैख़ अबू बक्र क़ुरैशी, सैय्यिद अहमद बुख़ारी, हाफ़िज़ अहमद, शैख़ अफ़ज़ल मुहम्मद, सैय्यिद बाक़ी, शैख़ बा यज़ीद शरवानी, शैख़ बा यज़ीद ख़वेशगी, ख़्वाजा बख़्तियार, सैय्यिद बदरुद्दीन, सैय्यिद भिकारी, मीर तपां, अमीर सैय्यिद जलाल मुतावक्किल, सैय्यिद जलाल बुख़ारी, शैख़ चंदन क़ुरैशी, मौलाना शैख़ हसन शीराज़ी, शैख़ हुसैन बदख़शी,

सैय्यिद हुसैन, शाह हैदर, ख़्वाजा ख़िज़र, शैख़ ख़लील, अमीर सैय्यिद दाऊद, शाह रफ़ीअ सब्ज़ पोश, मीर रफ़ीउज़्ज़मान, शैख़ सालिम, सक़्क़ा, सैय्यिद शाह मीर, मीराँ आरिफ़ हुसैनी, शैख़ अब्दुल्लाह खटवासन, शैख़ अब्दुल्लाह बुख़ारी, शैख़ अब्दुलहकीम, ख़्वाजा अब्दुर्रऊफ़, शाह अब्दुल लतीफ़ बरी, शैख़ अबदी, शैख़ फ़तहुल्लाह, शाह फ़तह अली, शैख़ कमाल, शैख़ कमालुद्दीन हुसैन, शाह मुजाहिदुद्दीन, शैख़ मुहिब्बुल्लाह, सैय्यिद मुहम्मद बुख़ारी, शैख़ मुहम्मद ज़ाहिद, शैख़ मुहम्मद आरिफ़, मौलाना मुहम्मद आरिफ़, शैख़ महमूद, सैय्यिद मुर्शिदुद्दीन, शैख़ नाज़िर, शैख़ नसीरुद्दीन अंसारी, शाह नूरुज़्ज़मान, शैख़ वली मुहम्मद नारनौली, शाह हरे भरे, शैख़ यूसुफ़ लंक, शैख़ यूसुफ़ अंसारी, शाह अज़मतुल्लाह, शेर अली शाह, नन्हे मियां रहमतुल्लाह अलैहिम वगैरा ।

आरिफ़ा और सालिहा औरतों में से बीबी जीवनी, चांद बीबी, बीबी ख़ाकी शाह, बीबी क़ुतुबन, बीबी नबफ़शा, बेगम सुल्तान रहमतुल्लाह अलैहिन्ना मौजूद हैं।

आगरा शहर का आबाद होना

आगरा अगर्चे बहुत पुराना शहर है मगर इस्लामी ज़माने और सुल्तान सिकन्दर लोदी के ज़माने से पहले येह एक गुमनाम जगह से ज़्यादा वुक़अत नहीं रखता था, 907 हिज्री बमुताबिक़ 1501 ईस्वी में सिकन्दर लोदी ने इस को नये सिरे से आबाद कर के अपना दारुल खिलाफ़त मुक़र्रर किया, इस बादशाह की दरवेश परस्ती, इल्मी क़दरदानी और कमाल पर्वरी की बरकत से चंद ही रोज़ में येह नौ आबाद शहर मशाइख़ीने नामदार का मर्कज़ और शीराज़ व बग़दाद की तरह दारुल उलूम बन गया और सुल्तान की नेक नीय्यती, ख़ुदा दोस्ती, कमाल पर्वरी

बहुत से अहले दिल बुज़ुर्गों और अहले कमाल आदमियों को दूर दराज़ इस्लामी मुल्कों से आगरा में खींच लाई और यहां की सुकूनत का बाइस हुई।

सुल्तान सिकन्दर लोदी के ज़माने में औलिया की आमद

चुनांचे शैख़ यूसुफ़ लंक, सैय्यिद रफ़ीउद्दीन मुहद्दिस, सैय्यिद अब्दुल्लाह दानिशमंद, शैख़ यूसुफ़ अंसारी, शाह नेअमतुल्लाह चिश्ती, शैख़ बुढन शत्तारी, शैख़ चंदन क़ुरैशी, शैख़ नसीरुद्दीन तमीमी अंसारी, शैख़ अबुल फ़तह मक्की, शैख़ अबू बक्र क़ुरैशी, सैय्यिद इस्माईल क़ादरी, शैख़ अब्दुल मोमिन चिश्ती, शैख़ हसन शीराज़ी, क़ारी अब्दुल मलिक, शैख़ महमूद, सैय्यिद जाफ़र मुहद्दिस रहमतुल्लाह अलैहिम वगैरा बुज़ुर्गाने अकबराबाद सुल्तान सिकन्दर लोदी के अहद यानी ज़माने में आगरा में रौनक अफ़रोज़ हो कर आबाद हुए।

उनके बाद मुफ़्ती अबुल फ़तह, मुफ़्ती बहाउद्दीन, सैय्यिद जलाल मुतावक्किल, शैख़ जलाल अंसारी, सैय्यिद अलाउद्दीन मज्ज़ूब, हाजी इब्राहीम मुहद्दिस, शैख़ मुबारक, शैख़ ज़ैनुद्दीन, शैख़ शहाबुद्दीन मुअम्माई, मौलाना अबुल वाजिद फ़ारग़ी वगैरा बाबरी, हुमायूंनी अहद यानी ज़माने में आगरा तशरीफ़ लाए।

दसवीं सदी हिज्री के औलियाए आगरा

दसवीं सदी हिज्री के अख़ीर तक जो अहदे अकबरी का आख़िरी ज़माना था, आगरा में उलमा फुज़ला और मशाईख़ीन का ख़ूब दौर दौरा रहा और हाजी इब्राहीम मुहद्दिस, सैय्यिद बदरुद्दीन, क़ाज़ी जलालुद्दीन, क़ाज़ी नूरुल्लाह शोस्तरी, ख़्वाजा मुहम्मद यहया, शैख़ मुनव्वर चिश्ती, शैख़ आरिफ़ हुसैनी, शैख़ अब्दुल वह्हाब, मौलाना कमालुद्दीन हुसैन,

शैख़ ज़ियाउल्लाह शत्तारी, क़ारी शैख़ मुहम्मद ख़ालिदी, मौलाना मीर कलां, मौलाना मीर, क़ाज़ी नासिर, शैख़ अब्दुर्रहमान क़ादरी, अल्लामा अबुल फ़ज़्ल, शैख़ अबुल फ़ैज़ फ़ैज़ी, शैख़ अब्दुल्लाह शत्तारी, शैख़ अबुल ख़ैर रहमतुल्लाह अलैहिम वग़ैरा उलमा फुज़ला और ख़ुदा शनास आगरा में तशरीफ़ लाए या पैदा हुए।

ग्यारहवीं सदी हिज्री के औलियाए आगरा

ग्यारहवीं सदी में जो कि जहांगीर और शाहजहाँ और आलमगीर का अहदे सलतनत है, ब निस्बत दसवीं सदी के तनज़्ज़ुली के आसार नुमायां होने लगे मगर फिर भी बाज़ मशाईख़ीन के तुफ़ैल हरा भरा रहा चुनांचे हज़रत शाह अबुल उला, मीर मुहम्मद नोअमान, सैय्यिद अहमद बुख़ारी, सैय्यिद जलाल बुख़ारी, सैय्यिद बाक़ी, शैख़ इस्माईल चिश्ती, अल्लामा अफ़ज़ल ख़ां, मीर अब्दुल्लाह तबरेज़ी, सैय्यिद अब्दुल क़ादिर बुख़ारी, अमीर फ़ैज़ुल उला, शैख़ मुहम्मदी, शैख़ मुहम्मद सालेह, शैख़ नाज़िर, मुल्ला अब्दुल अज़ीज़, मुल्ला अब्दुर्रशीद रहमतुल्लाह अलैहिम वग़ैरा बड़े बड़े मशहूर औलिया अल्लाह और उलमा, फुज़ला इस सदी में भी पैदा हुए।

बारहवीं सदी हिज्री के औलियाए आगरा

बारहवीं सदी में इस्लामी सल्तनत के तनज़्ज़ुल के साथ आगरा के मशहूर औलिया में भी हैरत अंगेज़ तनज़्ज़ुल पैदा हुआ, अय्यामे तवाइफ़ुल मुलूकी और जाटों और मराठों के ज़माने के तमाम शुरफा और मशाईख़ीन आगरा से रुख़स्त हो गए, जिस का येह नतीजा है कि तक़रीबन पूरी सदी में सिफ़र ही सिफ़र नज़र आता है, उस ज़माने से अंग्रेज़ों के ज़माने तक ऐसा तारीक यानी अंधेरा ज़माना गुज़रा कि बड़े बड़े औलिया

अल्लाह और मशाईख़ीन की ख़ानक़ाहें, दरगाहें और मज़ारात तक खुद खुदा कर खत्म हो गए या कसमपुर्सी की वजह से बेनाम व लापता हो गए, किस क़द्र अफ़सोस की बात है कि पुराने बुज़ुर्गाने दीन रहमतुल्लाह अलैहिम के मज़ारात में सिर्फ दो एक मज़ार मशहूर और चंद मज़ारात का निहायत तलाशो तहक़ीक़ात से पता चला है, शाह अब्दुल्लाह शत्तारी, शैख़ ज़ियाउल्लाह शत्तारी, मौलाना मीर कलां, शैख़ इस्माईल चिश्ती, हाजी इब्राहीम मुहद्दिस, अमीर सैय्यिद जलाल मुतावक्किल, सैय्यिद बदरुद्दीन रहमतुल्लाह अलैहिम वग़ैरा में से औलियाए किबार यानी बड़े औलियाए किराम के मज़ारात तक का पता व निशान नहीं मिलता, चंद बा फ़ैज़ व नूरानी मज़ारात मौजूद हैं, उन के मकीनों का नाम बताने वाला दुनिया में कोई नहीं मिलता।

अफ़सोस कि शैख़ मुबारक, शैख़ फ़ैज़ी, शैख़ अबुल ख़ैर वगैरा में से मशाहीर के मक़ाबिर नेस्तो नाबूद कर दिए गए और किसी को गवर्मेंट को मुतावज्जेह करना क्या मा'ना उफ़ तक करने की तौफ़ीक़ ना हुई।

जिनके नक़्शे पा को रखती थी ज़मीं सर पर ब फख्र
तुर्बुतों में ख़ाक आलूदा हैं वो आली गुहर
नाम उनका कोई अब भूले से भी लेता नहीं
जिनके दरवाज़ों पे डंका बजता था शामो सहर
ख़ाक में मर कर मिले अफ़सोस वो आली दिमाग़
अब निशाने क़ब्र भी उनके नहीं आते नज़र

सैंकड़ों मज़ारात आबादी में आ कर लापता हो गए यानी आबादी बढ़ने की वजह से मज़ारात खत्म कर दिये गये, पुराने बुज़ुर्गाने दीन की ख़ानक़ाहें अक्सर लबे जमुना यानी जमुना नदी के किनारे थीं, मुग़लिया अहदे सल्तनत यानी ज़माने में वहां अमीर लोगों ने बड़ी बड़ी आलीशान

हवेलियाँ और बाग़ात तामीर कराये, कुछ आसार यानी निशानियाँ उस ज़माने में नेस्तो नाबूद हो गए, अब उस मक़ाम यानी जगह पर गैर मुस्लिमों का मुहल्ला बेलन गंज आबाद है, जिस में ग़ालिबन एक घर भी मुसलमान का नहीं है, मुग़्लिया ज़माने के अमीर लोगों की बड़ी बड़ी हवेलियों में गैर मुस्लिम साहूकार आबाद हैं, इस से आगे बढ़ कर जान साहिब मशहूर सौदागर के वसीअ कारख़ाने (फ़्लोर मिल्ज़, कॉटन मिल्ज़, बर्फ़ कारख़ाना वग़ैरा) और पानी पहुंचाने के कारख़ाने वग़ैरा बन गए हैं, दो एक मज़ार जान साहिब के कारख़ानों के अंदर अब तक मौजूद हैं, मगर साहिबे मज़ारात के नामो निशान का कुछ पता नहीं चलता, अब इस नवाह यानी अतराफ़ में हज़रत मीर रफ़ीउद्दीन मुहद्दिस और शाह फ़ख़्रुद्दीन मदारी रहमतुल्लाह अलैहिमा के दो पुराने मज़ारात मशहूरो मारूफ़ बाक़ी रह गए हैं।

तेरहवीं और चौदहवीं सदी हिज्री के औलियाए आगरा

बारहवीं सदी हिज्री की तारीकी के बाद तेरहवीं और चौदहवीं सदी हिज्री के बुज़ुर्गाने दीन नेमते ग़ैर मुतरक़्क़बा मालूम होते हैं, मौलाना ज़ियाउद्दीन बलख़ी, मौलाना अहमदी क़ादरी, मौलाना आदिल, सैय्यिद अमजद अली शाह क़ादरी, शाह मुहम्मद चिश्ती, हकीम सैय्यिद नूरुद्दीन, हकीम सैय्यिद महेर अली, शाह बेदार बख्त, हाफ़िज़ अब्दुल्लाह, मियां नज़ीर, शैख़ इमाम अली शाह, सल्लू शाह मज्ज़ूब, मिर्ज़ा अली शाह मज्ज़ूब, बब्बू शाह मज्ज़ूब, मौलवी सैय्यिद वारिस अली, हम्द शाह व मुहब्बत शाह नक़्शबंदी रहमतुल्लाह अलैहिम।

आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत

अल्लामा सईद अहमद मारहरवी ने **"बोस्ताने अख्यार"** नाम की किताब 116 साल पहले लिखी थी जिस को नई तरतीब और तस्हील के साथ मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफीक ख़ान अत्तारी मदनी फतेहपुरी साहिब ने नया नाम **"आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत"** दे कर पेश किया है।

येह किताब महेज़ एक तस्नीफ़ नहीं बल्कि आगरा की रुहानी तारीख़ का ज़िंदा दस्तावेज़ है। आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत में वो पाकीज़ा हस्तियाँ जमा की गई हैं जिनकी बरकतों से आगरा की सर ज़मीन सदियों से मुनव्वर चली आ रही है।

आगरा की सर ज़मीन वो सर ज़मीन है जिसको सैकड़ों साल हिन्दुस्तान की राजधानी बनने का ऐज़ाज़ हासिल है। आपको जान कर ख़ुशी होगी कि आगरा की सर ज़मीन में :

🕌 अल्लामा इब्ने हजर अस्कलानी रहमतुल्लाह अलैह के पोते शागिर्द

🕌 अल्लामा सख़ावी रहमतुल्लाह अलैह के शागिर्द

🕌 अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाह अलैह के शागिर्द

🕌 हज़रत बाक़ी बिल्लाह रहमतुल्लाह अलैह के खलीफ़ा

🕌 मुजद्दिदे अल्फ़े सानी रहमतुल्लाह अलैह के खलीफ़ा

🕌 मुहम्मद ग़ौस ग्वालियरी रहमतुल्लाह अलैह के बेटे

🕌 हज़रत इम्दादुल्लाह मुहाजिर मक्की रहमतुल्लाह अलैह के खलीफ़ा

🕌 अब्दुल क़ादिर बदायूनी रहमतुल्लाह अलैह के असातिज़ा

🕌 हज़रत अब्दुर्रहीम मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह के असातिज़ा

🕌 आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैह के पीर साहिब सैय्यिद आले रसूल मरहरवी रहमतुल्लाह अलैह के असातिज़ा

🕌 हज़रत शाहे आलम रहमतुल्लाह अलैह, कुतुबे आलम रहमतुल्लाह अलैह के औलाद

🕌 मीर सैय्यिद शरीफ जुरजानी रहमतुल्लाह अलैह की औलाद

इनके इलावा और बहुत बुलंद पाया औलियाए किराम के मज़ारात मौजूद और उनकी सीरत इस किताब में महफ़ूज़ है।

इस किताब की सबसे बड़ी ख़ूबी येह है कि 283 औलियाए किराम का जामेअ तज़्किरा मुस्तनद तारीख़ी हवालों के साथ आम फहेम मगर इल्मी और वक़ार भरे उस्लूब में पेश किया गया है, जिसे पढ़ने वाला ख़ुद को आगरा की गलियों, ख़ानक़ाहों और मज़ारात की रुहानी फ़िज़ा में महसूस करेगा।

येह किताब मुस्लमानों के लिए बाइसे फ़ख़र, तलबा और मुहक़्क़िक़ीन के लिए क़ीमती सरमाया, और हर आशिक़े औलिया के लिए लाज़िमी मुताला है।

अगर आप चाहते हैं कि आपकी नस्लें अपने औलिया को पहचानें, घरों में दीनी व रुहानी माहौल क़ाईम हो और एक नायाब तारीख़ी किताब आपके घर की ज़ीनत बने तो आज ही इस किताब को हासिल करें। यक़ीन मानिए जो एक बार पढ़ेगा, वो दूसरों को भी पढ़ने पर मजबूर कर देगा।

🌷 सदक़ए जारिया का बेहतरीन मौक़ा 🌷

ऐ आशिकाने औलिया ! आइए! अक़ाबिर व औलियए किराम की मुक़द्दस ज़िंदगी को आम करें और अपनी आख़िरत सँवारें।

📗 किताब: बोस्ताने अख्यार

🕌 मौज़ू: आगरा के 283 बुज़ुर्गों व औलियाए किराम की पाक सीरत

📖 इल्म, अमल और रूहानियत से भरपूर एक अनमोल किताब

इस किताब को मस्जिदों में, मदरसों में, दरगाहों पर, ग़रीब मुसलमान और दीनी तलबा में इसाले सवाब के लिए तक़सीम करवा कर हमेशा का सवाब हासिल करें।

💰 तक़सीम रेट:

🔷 1 किताब — ₹350

🔷 5 किताब — ₹1750

🔷 10 किताब — ₹3500

📌 जो इल्म फैलाता है, वो सदियों तक ज़िंदा रहता है।

📌 बुज़ुर्गों की सीरत आम करना, ईमान की ताज़गी है।

👉 आज ही ऑर्डर देकर इस नेक काम में शरीक बनें।

👉 आपके नामए अमल में हमेशा सवाब जुड़ता रहेगा।

नियत करें — इल्म बाँटें — सवाब कमाएँ।

असल क़ीमत **700 रुपये** रिआयती क़ीमत **350 रुपये**

आर्डर बुक करवाने के लिए इस नंबर राबिता कीजिए

राबिता नंबर : +91 8808693818

मकतबा दारुस्सुन्ना, F 1 mewati नगला, ताजनगरी 2, आगरा

हींग की मंडी और नाई की मंडी के 17 औलियाए किराम की सीरत

हींग मंडी

(1) शैख़ फ़तहुल्लाह

आप रहमतुल्लाह अलैह तरीक़ए विलायत के राज़ दार, तालिबाने ख़ुदा के रहनुमा और हज़रत शाह अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के हम असर यानी ज़माने के थे, आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** मुहल्ला नाई मंडी में मुत्तसिल चौराहा कचहरी कलैक्ट्री पक्की सड़क की किनारे वाक़ेअ है।

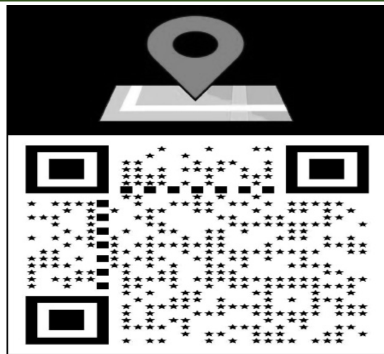
(बोस्ताने अख्यार, पेज132)

मौजूदा हालत 2025

हज़रत शैख़ फ़तहुल्लाह रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक सदर भट्टी चौराहे से ढाकरान की जानिब जाने वाले रोड पर चौराहे से दो बिल्डिंग छोड़ कर उल्टे हाथ में रोड के किनारे छोटी सी मस्जिद है जिसका नाम **'मस्जिद फ़तहुल्लाह'** है उसी मस्जिद में पीछे की जानिब आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक मौजूद है। इसी मस्जिद में आगे की जानिब एक और मज़ार है मगर साहिबे मज़ार का नाम मालूम ना हो सका मगर लोग उन्हें हाफ़िज़ साहिब के नाम से जानते हैं।

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार पर नाम और तारीख़ की तख़्ती नहीं लगी है।

शैख फ़तहुल्लाह रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



(2) शैख़ आरिफ़ हुसैनी (मीराँ आरिफ़ हुसैनी)

आप रहमतुल्लाह अलैह सैय्यिद शाह इस्माईल सफ़्वी की औलाद में से हैं, इस्म बा मुसम्मा यानी आरिफ़े ख़ुदा और बहुत बड़े साहिबे बातिन और करामतो विलायत वाले बुज़ुर्ग थे, आमिले कामिल और ज़ुहदो तक़्वा में बे नज़ीर थे, आप रहमतुल्लाह अलैह ने बड़ी बड़ी रियाज़तें और मुजाहिदे किए थे।

आप रहमतुल्लाह अलैह का खाना जौ की जली हुई रोटी और कड़वी घास थी कि सिवाए आप रहमतुल्लाह अलैह के किसी में इस के खाने की ताक़त ना थी।

शरीअत की इत्तिबा में बड़े साबित क़दम थे, ऐन अकबर बादशाह के दरबार में अज़ान कह कर नमाज़ पढ़ा करते थे, जब अकबर बादशाह की मुलाक़ात को तशरीफ़ ले जाते तो वो एक ज़र्रीं प्याले में मुश्को काफ़ूर और बहुत सी खूश्बुएं डाल कर बतौरे तोहफ़ा पेश किया करता था, अकबर बादशाह ने बहुत इल्तिजा की कि कुछ जागीर या नक़द रुपये ले लीजिए मगर आप रहमतुल्लाह अलैह ने क़बूल ना फ़रमाया और हमेशा आप रहमतुल्लाह अलैह ने यही जवाब दिया कि रुपये अपने खादिमों को दो क्योंकि वो बहुत बद हाल हैं।

एक रोज़ अकबर बादशाह ने आप रहमतुल्लाह अलैह से कहा कि या तो आप रहमतुल्लाह अलैह हम से हो जाएं या हमें अपना सा कर लें। आप रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया कि हम ना मुराद लोग आप जैसे कैसे हो सकते हैं? अगर तुम हम से होना चाहो तो हमारे पास आकर बैठ जाओ।

आप रहमतुल्लाह अलैह ने सय्याही यानी सैर बहुत फ़रमाई, गुजरात, पंजाब और कश्मीर, तिब्बत ग़र्ज़ कि दूर दूर तक फिरे, हर जगह बहुत सारी करामात आप रहमतुल्लाह अलैह से ज़ाहिर हुई। गोल काग़ज़ काट कर जलती हुई अँगीठी (यानी आग) में डाल देते और उस में से अशरफियां (यानी सोने के सिक्के) निकाल कर सब हाज़िरीने मजलिस को तक़सीम कर देते थे, सर्दी के मौसम में गर्मी के और गर्मी के मौसम में सर्दी के मेवे लोगों को इनायत फ़रमाते थे।

अगर आप रहमतुल्लाह अलैह को किसी हुजरे में ताला लगा कर बंद कर दिया जाता था तो ख़ुद ब ख़ुद वहां से निकल कर दूसरी जगह ज़ाहिर हो जाते थे। आप रहमतुल्लाह अलैह हमेशा मुँह पर निक़ाब डाले रहते थे, एक मर्तबा कश्मीर में अकबर बादशाह ने शैख़ अबुल फ़ज़्ल और हकीम अबुल फ़तह को आप रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में भेजा उन्होंने ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ किया कि अगर आप रहमतुल्लाह अलैह निक़ाब को उठा लें तो हम आप रहमतुल्लाह अलैह के दीदार मुबारक से मुशर्रफ़ हो जायें। आप रहमतुल्लाह अलैह ने इन्कार फ़रमाया और कहा की फ़क़ीरों को सताना अच्छा नहीं, हकीम अबुल फ़तह के मिज़ाज में शोख़ी और गुस्ताख़ी ज़्यादा थी उस ने इन्कार करने के बावजूद आप रहमतुल्लाह अलैह के निक़ाब की तरफ़ हाथ बढ़ाया, इस पर आप रहमतुल्लाह अलैह को जलाल आ गया और निक़ाब उतार कर ज़मीन पर फेंक दिया और फ़रमाया कि मआज़ अल्लाह मैं मज्ज़ूबो मायूब (यानी ऐबदार) नहीं हूँ, लो मेरा मुँह देख लो। मगर हकीम

याद रखना तूने मेरा मुँह तो देख लिया इंशा अल्लाह दो हफ़्ते के बाद इस का नतीजा भी देख लेगा। चुनांचे पूरे पंद्रह दिन ना गुज़रे थे कि हकीम अबुल फ़तह यकायक इस्हाले कब्दी के मर्ज़ में मुब्तला हो कर इंतिक़ाल कर गया।

21 रबीउस्सानी 1006 हिजरी ब मुताबिक़ 1597 ईस्वी को आप रहमतुल्लाह अलैह आलमे नासूत से आलमे मलकूत की सय्याही को रवाना हो गए यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हो गया।

आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** मस्जिद मुहल्ला मीराँ हुसैनी में ज़ियारत गाह है। येह मुहल्ला और मस्जिद आप रहमतुल्लाह अलैह ही के नाम से मौसूम और मुहल्ला की बेश्तर ज़मीन अब तक मस्जिदो मज़ार के अख़राजात के वास्ते वक़्फ़ और ज़ेरे ऐहतिमाम कमेटी लोकल एजैंटी है। (बोस्ताने अख्यार, पेज93.94.95)

मौजूदा हालत 2025

हज़रत शैख़ आरिफ़ हुसैनी अल मारूफ़ मीराँ आरिफ़ हुसैनी रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक सदर भट्टी चौराहे से मीराँ हुसैनी चौराहे की तरफ़ जाते हुए मीराँ हुसैनी चौराहे से पहले सीधे हाथ पर गली के अंदर मौजूद मस्जिद के अंदर मेहराब से उल्टे हाथ की जानिब एक कमरे में मौजूद है। पहले मस्जिद का नाम **'मस्जिद मीराँ हुसैनी'** था लेकिन अब लोगों ने इस मस्जिद का नाम **'मस्जिदे आईशा'** रख दिया है।

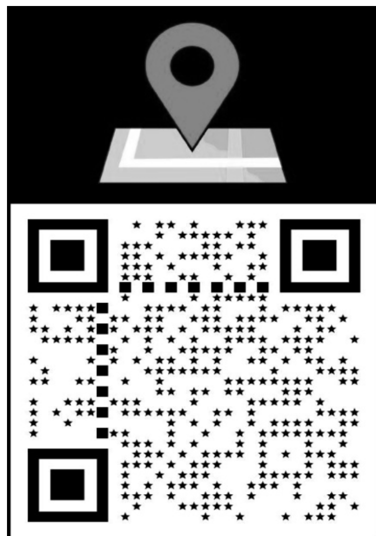
मस्जिद के मेहराब के सीधे हाथ पर भी एक कमरा है और इस में भी कई मज़ारात बने हुए हैं लेकिन कुछ पता नहीं चल सका कि वो मज़ारात किन के हैं।

मज़ार के इर्द गिर्द लकड़ी की छोटी सी जाली लगी है, फ़र्श पर मार्बल और तावीज़ की तख़्ती पर नाम व तारीख़ बोस्ताने अख्यार के

हवाले से लिखी हुई है लेकिन बोस्ताने अख़्यार में 1006 हिजरी है जबकि मज़ार की तख़्ती में 1004 हिजरी लिखी हुई है।

मज़ार मुबारक पर एक ख़ूबसूरत गुंबद भी बना हुआ है जिसका अक्सर हिस्सा मस्जिद की इमारत में दबा हुआ है।

शैख आरिफ़ हुसैनी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



(3) शैख़ कमाल

आप रहमतुल्लाह अलैह शैख़ ज़ैनुद्दीन सिद्दीक़ी के फ़र्ज़ंद अर्जुमंद यानी बेटे हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह बनारस के रहने वाले हैं, तमीज़ की उम्र को पहुंच कर संभल तशरीफ़ ले गए, दो साल तक शैख़ उस्मान बंगाली रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में रह कर इल्मो फ़ज़्ल हासिल किया।

इस के बाद शैख़ जलाल थानसेरी रहमतुल्लाह अलैह और शैख़ मुबारक की फ़ैज़े सोहबत से फ़ैज़याब हो कर आगरा में सुकूनत इख्तियार की। बड़े मुतावक्किल और तन्हाई पसंद बुज़ुर्ग थे।

10 शवाल 1009 हिजरी को रेहलत फ़रमाई, **मज़ार मुबारक** मुहल्ला हींग मंडी में तकिया वज़ीर शाह के अंदर वाक़ेअ है।

(बोस्ताने अख्यार, पेज142.143)

मौजूदा हालत 2025

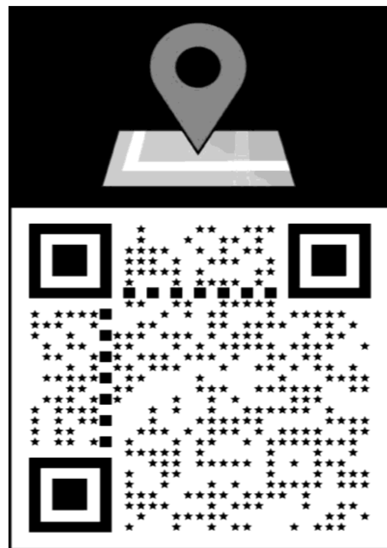
हज़रत शैख़ कमाल रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर जाने का आसान रास्ता येह है कि सदर भट्टी चौराहे से मीराँ हुसैनी चौराहे की जानिब आएं और मीराँ हुसैनी चौराहे से हींग की मंडी की तरफ़ आगे बढ़ते जाएं हींग मंडी रोड पर मलंग शाह रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार आएगा, उनके मज़ार के बग़ल से नीचे को एक रास्ता गया है इस रास्ते से जूं ही उतरेंगे तकिया वज़ीर शाह आ जाएगी, बीच में छोटा सा एक मैदान बना है उसी मैदान के पास एक मस्जिद है जिसका नाम **'मस्जिदे आईशा'** है उसी मस्जिद में गेट से घुसते ही शैख़ कमाल रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मौजूद है। मज़ार का नक़्शा येह है:

वज़ीर शाह की क़ब्र

मस्जिद का दरवाज़ा		
क़ब्र	मस्जिद में जाने का रास्ता	खाली जगह
		शैख़ कमाल का मज़ार
क़ब्र		शैख़ कमाल की बैठक
		मह्दी नामी ख़ादिम की क़ब्र

मस्जिद के गेट से पहले ही एक कच्ची सी क़ब्र बनी है वो क़ब्र वज़ीर शाह की है जिनके नाम से येह इलाक़ा तकिया वज़ीर शाह कहलाता है। तकिया वज़ीर शाह में बने हुए कई घरों के अंदर भी मज़ारात मौजूद हैं लेकिन नाम वग़ैरा का कुछ पता नहीं।

शैख कमाल रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



(4) शैख़ मुहम्मदी चिश्ती साबरी

आप रहमतुल्लाह अलैह शैख़ ईसा रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़ंदे रशीद यानी बेटे हैं, जो क़स्बा ख़ैराबाद के क़रीब मौज़अ गरचे में सुकूनत पज़ीर थे, इसी मौज़अ में 14 शव्वाल 1021 हिज्री को आप रहमतुल्लाह अलैह ने आलमे ग़ैब से आलमे दुनिया में ज़हूर फ़रमाया यानी पैदा हुए।

आप रहमतुल्लाह अलैह इब्तिदाए हाल में खेल कूद में मशग़ूल थे, हर चंद वालिद बुज़ुर्गवार रहमतुल्लाह अलैह नसीहत फ़रमाते, समझाते बुझाते मगर आप रहमतुल्लाह अलैह पर कुछ असर ना होता था, आख़िरे कार एक दिन

आप रहमतुल्लाह अलैह के वालिद शैख़ ईसा रहमतुल्लाह अलैह ने आप रहमतुल्लाह अलैह को अय्याश लोगों के साथ देख कर बहुत मारा पीटा । चूँकि मशीय्यते इलाही शामिले हाल थी रगे ग़ैरत मुहर्रिक हुई, उसी दिन घर से निकल कर उलूमो फ़नून हासिल करने में मसरुफ़ हुए और चंद ही मुद्दत में उलूमे ज़ाहिरी की तहसील से फ़ारिग़ हो कर उलूमे बातिनी के हुसूल की फ़िक्र दामन गीर हुई, जिसने आप रहमतुल्लाह अलैह को शैख़ कबीर शाह मुहिब्बुल्लाह इलाहाबादी रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत बा बरकत में पहुंचा दिया।

मुकम्मल 16 साल आप रहमतुल्लाह अलैह हज़रत शैख़ कबीर शाह इलाहाबादी रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में रहे और उनके अन्फ़ास और तवज्जोह की बरकत से ऐसे कमाल दर्जे पर पहुंचे कि एक दिन पीर रौशन ज़मीर ने निहायत मेहरबानी करते हुए तरीफ़ी कलिमात इरशाद फ़रमाये और उस मुरीद के क्या कहने जिसका पीर उस के हक़ में तरीफ़ी कलिमात इरशाद फरमायें।

तकमील के बाद पीर बुज़ुर्गवार रहमतुल्लाह अलैह ने आगरा के क़ियाम का हुक्म दिया, आप रहमतुल्लाह अलैह अपने वतन से होते हुए आगरा तशरीफ़ लाए और यहां की सुकूनत इख्तियार फरमा कर मख़्लूक़े ख़ुदा को फ़ैज़ पहुंचाने लगे।चूँकि आप रहमतुल्लाह अलैह अरबाबे कमाल की मुलाक़ात के आशिक़ थे लिहाज़ा सय्याही यानी सैर पर दिल निहाद हो कर चंद रोज़ तक हिन्दुस्तान के मुख़्तलिफ़ शहरों की सैरो सयाहत फ़रमाते रहे। इसी सिल्सिले में ब मक़ाम अमरोहा मुताहिल हुए यानी शादी कर ली, उस के बाद कुछ मुद्दत अमरोहा और कुछ अरसा आगरा में क़ियाम रहने लगा।

शैख़ मुहिब्बुल्लाह इलाहाबादी रहमतुल्लाह अलैह की वहदतुल वुजूद के मसअले पर ख़ास तवज्जोह थी और बहुत से मसाइल में वो शैख़

अकबर मुहिय्युद्दीन अरबी रहमतुल्लाह अलैह के मुक़ल्लिद थे इसी वजह से अक्सर अहले इनाद आप रहमतुल्लाह अलैह को ज़ंदिक़ा और इल्हाद की तरफ़ मंसूब करते थे, शैख़ मुहिब्बुल्लाह इलाहाबादी रहमतुल्लाह अलैह के इंतिक़ाल के बाद आप रहमतुल्लाह अलैह का एक रिसाला **'तस्वियह'** आलमगीर बादशाह की नज़र से गुज़रा जिसमें ब ज़ाहिर बहुत सी बातें शरीअत के ख़िलाफ़ मालूम होती थीं उस वक़्त शैख़ मुहिब्बुल्लाह इलाहाबादी रहमतुल्लाह अलैह के दो मुरीद और ख़लीफ़ा मौजूद थे, एक सैय्यिद मुहम्मद चिश्ती कन्नौजी रहमतुल्लाह अलैह जो शाहजहाँ बादशाह के रफ़ीक़ और उस्ताद और साहिबे इज़्ज़त व जाह थे, दूसरे शैख़ मुहम्मदी चिश्ती साबरी रहमतुल्लाह अलैह ।

बादशाह ने पहले वो रिसाला सैय्यिद मुहम्मद चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में भेज कर लिखा कि रिसाले के मसाइल को अहकाम शरीअत के मुताबिक़ साबित कीजिए वर्ना शैख़ की मुरीदी से इस्तिग़फ़ार कर के उन के रिसाले को आग में जला दीजिए, सैय्यिद मुहम्मद चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह ने शैख़ की मुरीदी से इन्कार किया यानी उनकी बैअत तोड़ दी । फिर वो रिसाला बादशाह आलमगीर ने शैख़ मुहम्मदी रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में भेजा । आप रहमतुल्लाह अलैह ने दरवेशाना दिलेरी से जवाब दिया कि मुझे शैख़ की मुरीदी से इन्कार नहीं, शैख़ ने जिन मक़ामात के मुताअल्लिक़ इस रिसाले में गुफ़्तगु फ़रमाई है अभी मेरी रसाई उस मक़ाम तक नहीं हुई, जब उस मर्तबे पर पहुँचूगा हस्बे दरख्वास्त मुश्किलात का हल लिख कर इरसाले ख़िदमत करूँगा यानी भेज दूंगा । अगर बादशाह ने रिसाले के जलाने ही का पक्का इरादा कर लिया है तो मेरे घर से शाही मतबख़ में आग ज़्यादा मौजूद है ।

बादशाह आलमगीर को इस जवाब पर बहुत ग़ुस्सा आया, रिसाले को फ़ौरन जलवा दिया और आप रहमतुल्लाह अलैह के वास्ते हरमैन शरीफ़ैन की ज़ियारत का फ़रमान सादिर हुआ, हस्बे हुक्म आप रहमतुल्लाह अलैह तशरीफ़ ले गए और 1090 हिजरी में हरमैन शरीफ़ैन की ज़ियारत और हज का फख्र आप रहमतुल्लाह अलैह को हासिल हुआ, दो हज अदा फरमा कर आप रहमतुल्लाह अलैह हिन्दुस्तान में वापिस आए, मुख़ालिफ़ीन और दुश्मनी रखने वालों ने फिर शोरो गुल मचाया और बादशाह को बहका कर नज़र बंदी का हुक्म जारी करा दिया।

मुद्दत तक आप रहमतुल्लाह अलैह औरंगाबाद के क़िले में नज़रबंद और यादे ख़ुदा में मसरूफ़ रहे और उसी जगह से 3 रजब 1107 हिजरी फ़िरदौसे बरीं को रवाना हो गए यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हो गया।

आप रहमतुल्लाह अलैह के जिस्म मुबारक को हस्बे वसीयत आगरा ला कर सिपुर्दे ख़ाक किया गया।

आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** मुहल्ला हींग मंडी में मुत्तसिल मंदिर आर्या समाज सड़क के किनारे वाक़ेअ है, पहले यहां आलीशान इमारत और ख़ानक़ाह बनी हुई थी इम्तिदादे ज़माना से तमाम इमारत मिस्मार हो कर ज़मीन ग़ैरो के क़ब्ज़े में पहुंच गई यहां तक कि मज़ार भी एक मकान के अंदर हो गया था, चंद साल का अरसा हुआ कि शाह बुख़ारी साहिब ने जो एक साहिब तक़्वे और मुतावक्किल बुज़ुर्ग हैं उस मकान को ख़रीद कर दालान और इहाता तामीर करवा दिया है, दरवाज़े की बाहरी पेशानी पर येह तारीख़ लिखी हुई है।

साक़ी इश्क शह मुहम्मद मा
बूद सरदारे मैकशाने हुब्ब

हमज़ए देहलवी ग़ुलामे ऊ
गुफ़्त तारीख़ बद मुग़ाने हुब्ब

“बद मुग़ाने हुब्ब” के अदद 1107 बनते हैं और यही आप रहमतुल्लाह अलैह के विसाल का हिजरी साल है। (बोस्ताने अख्यार, पेज158.161)

(5) मलंग शाह

आप रहमतुल्लाह अलैह सिल्सिला मदारिया के बुज़ुर्गों में से हैं, **मज़ार मुबारक** सड़क के किनारे मुहल्ला हींग मंडी मुत्तसिल विक्टोरिया स्कूल वाक़ेअ है।

तीन दूकानें इस मज़ार के मुताल्लिक़ मौजूद हैं यानी वक़्फ़ हैं।

(बोस्ताने अख्यार, पेज213)

मौजूदा हालत 2025

हज़रत मलंग शाह रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार हींग की मंडी वाले रोड पर रोड के किनारे मौजूद है। मीराँ हुसैनी चौराहे से सेब के बाज़ार की तरफ़ जाते हुए रेडीयो मार्कीट के पास। आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक से एक रास्ता ढलान से नीचे की तरफ़ गया हुआ है। विक्टोरिया स्कूल अब काफ़ी दूर है।

आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक बोसीदा हालत में एक कमरे के अंदर है। मज़ार सादा, फ़र्श बालू और सीमेंट का। मज़ार के तावीज़ पर तख़्ती नहीं लगी। कमरे के दरवाज़े के ऊपर एक पत्थर लगा हुआ है जिस पर **'हज़रत बाबा मलंग शाह रहमतुल्लाह अलैह, उर्स मुबारक 17 सफ़र'** लिखा हुआ है।

मलंग शाह रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



सेब का बाज़ार

(6) शैख़ बुढन शत्तारी

आप रहमतुल्लाह अलैह शैख़ अब्दुल्लाह शत्तारी मांडवी रहमतुल्लाह अलैह की औलाद में से हैं, शैख़ हाफ़िज़ जौनपुरी रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत से जो शैख़ अब्दुल्लाह शत्तारी रहमतुल्लाह अलैह के ख़लीफ़ा हैं, दोनों तरह के इल्म और दोनों जहां की सआदत का सरमाया तहसील कर के बहुत से कमालात फ़राहम किए थे, आप रहमतुल्लाह अलैह सुल्तान सिकन्दर लोदी के ज़माने में आगरा में मुक़ीम हुए और अपने मुरीदों को ख़ानवादए शत्तारिया के मुताबिक़ तालीम व तल्क़ीन फ़रमाया करते थे।

मज़ार मुबारक ग़ालिबन उसी मक़ाम पर है जहां बाज़ार सेब में एक ताक़ बना हुआ है, जो मक़ामे मज़ार पर बतौरे यादगार बना दिया गया है और बुढन शहीद के नाम से मौसूम है, सालाना उर्स होता है।

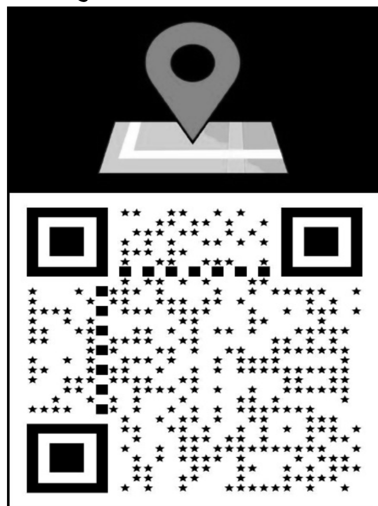
(बोस्ताने अख्यार, पेज56)

मौजूदा हालत 2025

हज़रत शैख़ बुढ्ढन शत्तारी रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक अब तो मौजूद नहीं है अलबत्ता काफ़ी तलाश के बाद 'सेब का बाज़ार' के रोड के किनारे एक ताक़ नज़र आया, उस के बारे में कई लोगों से पूछा मगर कुछ जवाब ना मिला, हो सकता है कि यही ताक़ हज़रत शैख़ बुढ्ढन शत्तारी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक का हो।

इस ताक़ तक पहुंचने का रास्ता येह है कि फ़व्वारा चौराहे से सेब के बाज़ार वाले रोड की तरफ़ जाएं, येह ताक़ उल्टे हाथ पर "राधा कृष्णा एंटरप्राइज़' और 'पंजाब सुलाई मशीन' इन दोनों दुकानों के बीच में बना है।

शैख़ बुढ्ढन शत्तारी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



नाई की मंडी

(7) सैय्यिद हुसैन शहीद

आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** साहिबे मिफ़्ताहुत्तवारीख ने मुत्तसिल नाई की मंडी लिखा है, राक़िमे बोसतान (अल्लामा सईद अहमद मरहरवी) ने हर चंद तलाश किया मगर कुछ पता नहीं चल सका, मुम्किन है कि आप रहमतुल्लाह अलैहका वो मज़ार हो जो मुत्तसिल मस्जिद मीराँ हुसैनी का तावीज़ बुलंद चबूतरे पर वाक़ेअ है और लोगों में सैय्यिद पहलवान के नाम से मौसूम है, क्योंकि उस का तावीज़ बहुत पुराना मालूम होता है और कतबा भी लिखा हुआ है जिसके हुरूफ़ बोसीदा होने की वजह से पढ़ने में नहीं आते, बहरे हाल आपके मज़ार पर कई अशआर लिखे हुए थे।

(बोस्ताने अख्यार, पेज72.73)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक को काफी तलाश किया मगर ना मिल सका, इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

आगरा के औलियाए किराम की सीरत की Video देखने और सुनने की लिए इस QR Code को Scan कीजिए ।

Like Share & Subscribe Channel



(8) सैय्यिद कमाल शहीद

आप रहमतुल्लाह अलैह शुहदाए अकबराबाद में से हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** मुहल्ला नाई मंडी में पेश दरवाज़ा मस्जिद मुहल्ला अथाईं वाक़ेअ है। (बोस्ताने अख्यार, पेज142)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक को काफी तलाश किया मगर ना मिल सका, इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

(9) हांडी मौक़ूफ़ शाह

आप रहमतुल्लाह अलैह का नाम मुबारक शाह बा यज़ीद और ख़िताब आशिक़े इलाही था, पंजाब के बाशिंदे सैय्यिद शाह अब्दुर्रहमान देहलवी रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद और ख़ानदाने सुहरवर्दिया क़ादरिया के साथ तअल्लुक़ रखते थे, आख़िर में जज़्बाते इलाही में बेखुद हो कर मस्त मौला हो गए, आप रहमतुल्लाह अलैह की अजीबो ग़रीब करामातें मशहूर हैं।

एक दिन तकिये में बीस पच्चीस अरब दरवेश यकायक तशरीफ़ ले आए, आप रहमतुल्लाह अलैह ने "हांडी मौक़ूफ़ डेगदान जारी" इरशाद फ़रमाकर हांडी को तो ज़मीन में गड़वा दिया और ख़ाली डेग, डेगदान (यानी वो चूल्हा जिस पर डेग रख कर खाना बनाया जाता है) पर चढ़वा दी और उसी में से निहायत लज़ीज़ खाने निकाल कर मेहमानों को खिलवा दिया, उस दिन से हांडी मौक़ूफ़ शाह आप डीका लक़ब पड़ गया, चुनांचे अब

तक आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** और तकिया जो मुहल्ला नाई मंडी में वाक़ेअ है इसी नाम से मौसूम है।

नवाब नजफ़ ख़ां को आप रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में बहुत ऐतिक़ाद था और एक रुपया यौमिया यानी रोज़ाना तकिया के अखराजात के वास्ते मुक़र्रर कर दिया था जिसे महाराजा सिंधी ने भी अपनी हुकूमत के ज़माने में जारी रखा, उसी ज़माने से अब तक सरकारी ख़ज़ाने से सफ़दर शाह जो मौजूदा गद्दी नशीन है उनको मिलते हैं।

फ़िदा शाह, हुदा शाह, निहायत शाह आप रहमतुल्लाह अलैह के तीन चेले बहुत ज़बरदस्त और साहिबे कमाल थे, इन तीनों के मज़ार तकिया के अंदर मौजूद हैं।

16 शाबान को आप रहमतुल्लाह अलैह का उर्स होता है, तकिया के क़रीब की ज़मीन जिसमें गल्ला वग़ैरा की मंडी लगती है उसी तकिया के मुताल्लिक़ माफ़ यानी वक़्फ़ है। (बोस्ताने अख्यार, पेज250)

मौजूदा हालत 2025

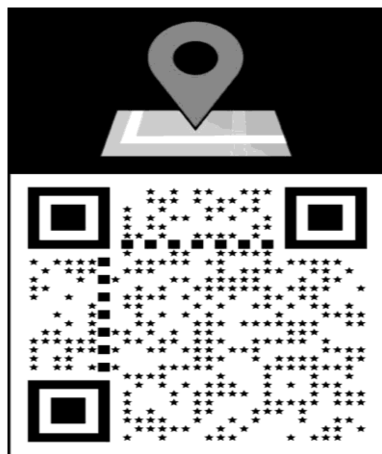
हज़रत शाह बा यज़ीद अल मारूफ़ हांडी मौक़ूफ़ शाह रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक ढाकरान चौराहे से गल्ला मंडी की तरफ़ जाते हुए उल्टे हाथ पर दुकानों के बीच गली के अंदर है। मज़ार से क़िब्ला की जानिब एक मस्जिद है जिसका नाम **'मस्जिद हांडी मौक़ूफ़ शाह'** है। अभी मज़ार पर तामीरी काम जारी है लोगों ने बताया कि इंशाअल्लाह मज़ार के ऊपर एक शानदार गुंबद बनाया जाएगा। आप रहमतुल्लाह अलैह का उर्स 16 शाबान को होता है।

मज़ार के क़रीब रहने वाले एक शख़्स ने आप रहमतुल्लाह अलैह की एक करामत येह बयान की कि ग्वालियर के राजा सिंध्या के औलाद नहीं हो रही थी, किसी ने कहा तुम आगरा में मौजूद शाह बा यज़ीद अल

मारूफ़ हांडी मौक़ूफ़ रहमतुल्लाह अलैह के पास जाओ अगर उन्होंने दुआ कर दिया तो ज़रूर तुम को औलाद की नेअमत मिल जाएगी। चुनांचे वो आप रहमतुल्लाह अलैह के पास आया, आप रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया नौ महीने बाद तुम्हारे यहां बेटा पैदा होगा। नौ महीने के बाद यक़ीनन उस के यहां बेटा हुआ। राजा सिंध्या आप रहमतुल्लाह अलैह की बारगाह में दोबारा हाज़िर हुआ और कहने लगा :हुज़ूर मैं आप रहमतुल्लाह अलैह को कुछ नज़र पेश करना चाहता हूँ, आप रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया मुझे उस की हाजत नहीं। राजा सिंध्या ने इसरार किया और सोने, चांदी, हीरे, जवाहिरात से भरा हुआ थाल आप रहमतुल्लाह अलैह के सामने रख दिया । आप रहमतुल्लाह अलैह ने उस थाल को देख कर वहां पर मौजूद नीम के दरख़्त को हिलाया, जिससे सोने, चांदी, हीरे, जवाहिरात गिरने लगे। आप रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया तेरे सोने, चांदी, हीरे, जवाहिरात से ज़्यादा मेरे पास पहले से ही हैं लिहाज़ा तुम उनको अपने साथ ले जाओ ।

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार के आप पास कई और मज़ारात और क़ब्रें बनी हैं लेकिन आप रहमतुल्लाह अलैह के तीनों चेलों के मज़ारात कौन से हैं नहीं पता चल सका ।

शाह बा यज़ीद अल मारूफ़ हांडी मौक़ूफ़ शाह रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



(10) हाथी शाह

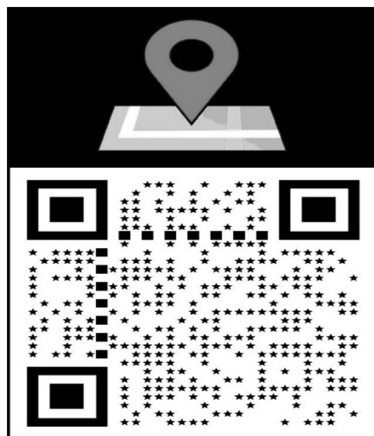
आप रहमतुल्लाह अलैह आगरा के पुराने बुज़ुर्गों में से हैं, ख़िरक़े आदात की अक्सर रिवायतें अब तक मशहूर चली आती हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** नई की मंडी के मुहल्लों में से एक मुहल्ला कटरा हाथी शाह में वाक़ेअ है, जो आप रहमतुल्लाह अलैह ही के नामे नामी से मौसूम है। (बोस्ताने अख्यार, पेज251)

मौजूदा हालत 2025

हज़रत हाथी शाह रहमतुल्लाह अलैह की मज़ार मुबारक को तलाश करने में काफ़ी वक़्त लगा कि जिससे पूछते थे ग़लत रास्ता बताते थे बिल आख़िर अल्लाह पाक के करम से घूमते घुमाते मज़ार मुबारक पर पहुंच गए। आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक नाई की मंडी के मुहल्ला डेरा सरस के क़ब्रिस्तान के क़रीब तेराहे पर बना हुआ है।

मज़ार मुबारक के तीन तरफ़ स्टील की रेलिंग लगी है, तख़्ती पर बोस्ताने अख्यार की पूरी इबारत लिखी हुई है जिसके आधे हुरूफ़ पढ़ने में आते हैं और आधे नहीं। फ़र्श बालू और सीमेंट का है। काश कि कोई आशिक़े औलिया तख़्ती और फ़र्श पर मार्बल वग़ैरा लगवा दे।

हाथी शाह रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



(11) अब्दुल्लाह

आप रहमतुल्लाह अलैह के असली नाम का कुछ पता नहीं चल सका, आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** झजरी वाले सैय्यिद के नाम से मशहूर और बहुत से लोगों को गिरवीदा किए हुए है, नाई की मंडी और मोती कटरा के बीच में पक्की सड़क के किनारे मज़ार वाक़ेअ है।

(बोस्ताने अख्यार, पेज104)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक को काफी तलाश किया मगर ना मिल सका, इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

(12) सैय्यिद अलाउद्दीन मज्ज़ूब

अल मशहूर ब अलादिल बलादिल

आप रहमतुल्लाह अलैह सैय्यिद सुलैमान रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़न्द यानी बेटे और सैय्यिद हसन हुसैनी रहमतुल्लाह अलैह के पोते हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह के जद्दे अमजद (यानी दादा) सैय्यिद हसन हुसैनी रहमतुल्लाह अलैह मदीनए मुनव्वरा से आकर हिन्दुस्तान की सैर से इबरत हासिल करते थे कि क़स्बा रुदौली (ज़िला बाराबंकी) में इत्तिफ़ाक़ से गुज़र हुआ, यहां की ख़ाक दामनगीर हुई और आबो हवा ऐसी पसंद आई कि सय्याही को छोड़कर यहीं आबाद हो गए।

चंद रोज़ के बाद मुताहिल हुए यानी शादी की और रफ़्ता रफ़्ता मकान, ख़ानदान, फ़र्ज़ंद, ख़्वेश, मुतअल्लिक़ीन, दरवेश बहुत से फ़राहम हो गए, उनकी वफ़ात के बाद उनके फ़र्ज़ंदे रशीद सैय्यिद सुलैमान ने बहुत कुछ तरक़्क़ी की और दरवेशी से इमारत के दर्जे पर पहुंचे, जब उनकी हयात यानी ज़िंदगानी का पैमाना लबरेज़ हुआ तो उन्होंने अपना मालो सामान, देहातो ज़राअत यानी ज़मीन जाइदाद बहुत कुछ छोड़ा, जिसकी तक़्सीम पर उनके बेटों के बीच झगड़ा पैदा हुआ, शैख़ अलादिल रहमतुल्लाह अलैह नजीबुत्तरफ़ैन सैय्यिद हैं लेकिन सब भाईयों में सबसे छोटे थे इस वजह से चंद भाईयों ने यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाइयों की तरह आप रहमतुल्लाह अलैह के मार डालने का इरादा किया, माँ की मामता मशहूर है किसी तरह आप रहमतुल्लाह अलैह की माँ को बेटों के हसद का हाल मालूम हो गया और वो सब मालो दौलत पर लात मार कर अपने फ़र्ज़ंदे अज़ीज़ यानी बेटे को ले कर पोशीदा तौर से क़स्बे से निकल खड़ी हुईं।

सफ़रे हिजाज़ यानी मक्का मदीने का अज़्म बिल्जज़्म करके रवाना हुईं, दिन में भेड़िया सिफ़त भाईयों के पीछा करने के ख़ौफ़ से किसी अँधेरी जगह में छुपी रहतीं और रात में जितनी ताक़त साथ देती थी रास्ता चलती रहती थीं, ग़र्ज़ येह कि इसी तरह जंगलो बयाबान को पार कर के हरमैन शरीफ़ैन की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुईं और दोनों मक़ामाते मुक़द्दसा में अपने बेटे के लिए रातो दिन दुआएं मांगती रहीं।

चंद साल के बाद मेहरबान माँ का साया भी आप रहमतुल्लाह अलैह के सर से उठ गया, एक तो ग़ुर्बत की कोफ़्त थी इस पर येह दर्दो रिक़्क़त और बढ़ गया, चूँकि मशीय्यते इलाही शामिले हाल थी आपका ख़्याल इल्म की तरफ़ माइल हुआ और एक मुद्दत तक उन अतराफ़ में रह कर रस्मी उलूम की तहसील की, फिर बुज़ुर्गाने इस्लाम की सुन्नत पर कमर बांध कर

प्रकार की तरह तमाम जहान का गश्त लगाया और सैकड़ों बुज़ुर्गाने दीन की ख़िदमत से फ़ैज़ो कमालात के ज़ख़ीरे फ़राहम कर के हिन्दुस्तान वापस आए।

कुछ मुद्दत तक सामाना में क़ियाम किया, फिर दिल्ली में तशरीफ़ लाए और इफ़ादते दस्तगाह मियां लाडन कंबोह मुफ़्तिये देहलवी के दर्स में बैठ कर तफ़्सीरों का मुतालअ़ा किया और हमेशा मज़ार फ़ाइज़ुल अन्वार ख़्वाजा क़ुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाह अलैह पर हाज़िर होकर फ़रोग़े मा'नवी की दुआएं मांगा करते थे, आख़िरे कार मेहरबान माँ की और आप रहमतुल्लाह अलैह की दुआओं ने बारगाहे इलाही में शर्फे क़बूलियत का ख़िलअत पाया और जज़्बे मुतलक़ ने जो हक़ीक़ी वह़दत से मुक़य्यद था आप रहमतुल्लाह अलैह को उचक लिया और आप रहमतुल्लाह अलैह साहिबे विलायत के ख़िलअत से मुशर्रफ़ हो कर दारुल खिलाफ़त आगरा में रौनक अफ़रोज़ हुए।

बाबर बादशाह की सल्तनत का ज़माना था कि आप रहमतुल्लाह अलैह ने जमुना के किनारे पर एक हुजरा तजवीज़ कर लिया और क़ुरआन शरीफ़ की तिलावत और तफ़सीरे क़ुरआन के मुतालअ़ा में मसरूफ़ हुए, शाह फ़ख़्रुद्दीन मदारी रहमतुल्लाह अलैह के तशरीफ़ लाने तक जिसका हाल उन के ज़िक्रे ख़ैर में बयान किया जाएगा आप रहमतुल्लाह अलैह उसी जगह मुक़ीम रहे, उस के बाद उस मक़ाम पर जहां अब आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक वाक़ेअ और मुहल्ला दरबार शाह जी या शाह विलायत के नाम से मौसूम है आप रहमतुल्लाह अलैह चले आए।

आप रहमतुल्लाह अलैह की नज़र में कीमियाई असर और बात में मक़बूलियत की तासीर थी, जज़्बाते इलाही में बेखुद और दरियाए तौहीद में ग़र्क़ रहते थे, सीने पर ख़ुदाई इल्म तहरीर था जो कुछ ज़बान से निकल

जाता वो तक़दीरे इलाही का नविश्ता होता था, कश्फो करामात बेशुमार और ख़िरक़े आदात बे तादाद हैं, अबुल फ़ज़्ल ने आईने अकबरी में लिखा है और ख़ुद शैख़ मुबारक से गुलज़ारे अबरार में मन्क़ूल है कि जब मैं गुजरात से आगरा में आया तो सबसे पहले आप रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में हाज़िर हो कर उम्मीद वारे बिशारत हुआ, आप रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया कि इसी सईद शहर में तुमको क़ियाम करना चाहिए, तुम्हारे ख़ानदान में आली दर्जा फ़र्ज़ंद, वाफिर इल्म और कसीर दौलत येह सब नेअमतें बहुत जल्द नसीब होने वाली हैं, लेकिन इस के साथ येह भी है कि तुम्हारे सिल्सिले में एक जांगुज़ा आफ़त और मोहलिक फ़ित्ना पैदा होगा जो तोहमत और बदनामी का बाइस होने वाला है, अंदेशा ना करना क्योंकि क़ुरआने पाक के सूरए दुहा में अल्लाह पाक का इरशाद है :

"तुम्हारा परवरदिगार ना तो तुम से दस्त बरदार हुआ और ना नाख़ुश हुआ और तुम्हारा अंजाम आग़ाज़ से बेहतर है"

अंजामे कार ख़ैरीयत है, आप रहमतुल्लाह अलैह के दिल को ख़ुश करने वाले कलिमात फ़रमान के ब मूजिब आख़िरे कार रोज़ अफ़्ज़ूँ आसार नज़र आने लगे यानी जैसा आप रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया वैसा ही हुआ।

अख्बारूल अख्यार में शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह ने लिखा है कि मेरे चचा मुकर्रम शैख़ रिज़्क़ुल्लाह रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं कि एक दिन बेटे की खबर ना मिलने की वजह से सख़्त परेशान और बड़ी सोच में था और दिल में ख़्याल करता था, कि उस की ख़ैरीयत के वास्ते सदक़े की मन्नत मानूँ या क़ुरआन शरीफ़ पढ़ूं या अल्लाह पाक के नामों में से किसी नाम का विर्द करूँ, इसी ख़्याल व शक में हज़रत अलाउद्दीन रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में गया आप रहमतुल्लाह अलैह

ने मुझे देखते ही आयते करीमा "فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْآنِ" पढ़ कर फ़रमाया: क़ुरआन शरीफ़ पढ़ना सबसे बेहतर है।

शैख़ हातिम संभली रहमतुल्लाह अलैह जो आप रहमतुल्लाह अलैह के हम अस्र यानी ज़माने और हिन्दुस्तान के मशहूर बा अमल उलमाए किराम में से थे किसी से येह सुनकर कि आप रहमतुल्लाह अलैह शरई अहकाम के दायरे से बाहर क़दम रख कर करामात और मक़ामात के दावे करते हैं, आगरा में आए, जब आप रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो इस से पहले कि अपने ऐतिराज़ी मसाइल बयान करें, ख़ुद ब ख़ुद उन ऐतिराज़ी मसाइल का शाफ़ी जवाब आप रहमतुल्लाह अलैह की ज़बाने मुबारक से सुन कर हैरान रह गए और अक़ीदतो इख्लास के लिबास से मुशर्रफ़ हो कर वापस हुए।

शैख़ निज़ाम नारनौली रहमतुल्लाह अलैह को जो क़ुतुबे ज़माना थे उन के पीर रहमतुल्लाह अलैह ने आप रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में भेजा और फ़रमाया कि जिस मक़ाम के वास्ते वो मज्ज़ूबे इलाही फ़रमाएं वहीं सुकूनत इख्तियार करो यानी वहीं रह कर दीन की खिदमत करो, जब शैख निज़ाम रहमतुल्लाह अलैह आप रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो आप रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया कि ऐ सानी निज़ाम! तुम्हारे ज़हूर की जगह नारनौल है और तुम्हारे काम की रौनक और उस का इजरा उसी मक़ाम के साथ वाबस्ता है जो वक़्त पर वक़ूअ में आएगा।

मीर रफ़ीउद्दीन मुहद्दिस अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह को भी आप रहमतुल्लाह अलैह से बहुत अक़ीदत थी जो कोई ख़ास बात पेश आती किसी को आप रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में भेज कर दुआ और सलाह की इल्तिमास करते और सब आप रहमतुल्लाह अलैह के हुक्म की तामील करते थे।

इस किस्म की सैकड़ों उम्दा उम्दा करामतें और ख़िरक़े आदात आप रहमतुल्लाह अलैह की तारीख़ों और तज़्किरों और मल्फ़ूज़ात में बयान की गईं और बहुत सी अब तक लोगों की ज़बानों पर हैं, लेकिन चूँकि बोस्ताने अख्यार मुख़्तसर किताब और तवालत से ख़ाली है लिहाज़ा हवाले क़लम करने से मजबूरी है, अब तक मज़ारे अक़्दस की अक़ीदतो मुहब्बत का तौक़ शहर के हज़ारों मुसलमान और ग़ैर मुसलमान बाशिंदों के गलों में पड़ा हुआ है और हज़ारहा लोग आप रहमतुल्लाह अलैह के अस्तानए आलिया से दुनिया व दीन की मुरादें पाते हैं।

आगरा शहर ख़ुसूसन नाई की मंडी में जिस क़द्र शादियां होती हैं, दुल्हन दूल्हा रुख़स्त के बाद सबसे पहले इसी दरबार में हाज़िर हो कर अपने घर जाते हैं।

17 ज़िलक़ादा 953 हिजरी बमुताबिक़ 1546 ईस्वी को आप रहमतुल्लाह अलैह ने इस दारे फ़ानी से आलमे जावेदानी की तरफ़ कूच फ़रमाया और बहिश्त नशीनों के हम नशीन हुए।

मज़ार मुबारक पर एक गुंबद है जो आठ सुतूनों पर क़ाइम है, गुंबद के क़रीब वो मस्जिद वाक़ेअ है जिसके देखने के वास्ते बहुत से सैर करने वाले आया करते हैं, मशहूर है कि इस मस्जिद की तामीर में ख़ुद आप रहमतुल्लाह अलैह भी शामिल और सुन्नते नबवी ﷺ की पैरवी में सरगर्म थे, एक मौक़े पर आप रहमतुल्लाह अलैह की दुआ से आधी मस्जिद ज़मीन में धस गई थी जो अब तक उसी हालत पर है, वल्लाहु आलम।

(बोस्ताने अख्यार, पेज124.128)

मौजूदा हालत 2025

हज़रत अलाउद्दीन मज्ज़ूब रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक ढाकरान चौराहे से सदर भट्टी की जानिब जाते हुए अंदर बस्ती में मौजूद है

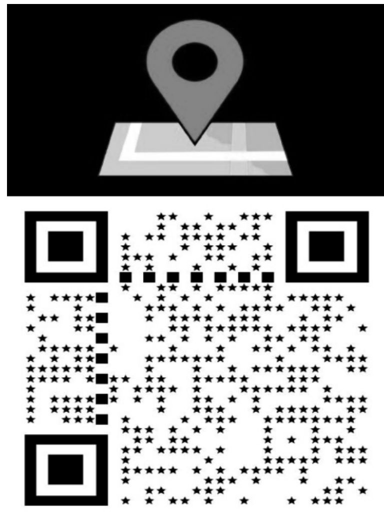
जो कि **'शाह जी'** के नाम से मशहूर है। अब भी आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार का गुंबद आठ पिलरों पर बना हुआ है। बग़ल में मस्जिद भी है और आप रहमतुल्लाह अलैह के पायँती खजूर का एक दरख़्त है। आस पास कई सारी क़ब्रें हैं। और दक्खिन की जानिब हज़रत मुहम्मद मुजाहिद शहीद रहमतुल्लाह अलैह की मज़ार है। मज़ार मुबारक के तावीज़ में जो तख़्ती लगी हुई है उस के काफ़ी हुरूफ़ मिट चुके हैं।

आप रहमतुल्लाह अलैह की करामत सगे अत्तार ने भी देखी है और वो येह कि आगरा के औलियाए किराम के मज़ारात को तलाश करने में काफ़ी दुशवारियाँ पेश आ रही थीं, रोज़ाना चार पाँच घंटे घूमने के बावजूद कभी तीन मज़ार पर और कभी चार मज़ार पर हाज़िरी होती, सारा वक़्त तलाश करने में ही गुज़र जाता क्योंकि अब आबादी भी बढ़ चुकी है और मुहल्लों के नाम भी बदल चुके हैं। आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार पर पहुंच कर सगे अत्तार ने फ़ातिहा पढ़ी और हज़रत अलाउद्दीन रहमतुल्लाह अलैह की बारगाह में अर्ज़ किया : हुज़ूर मज़ारात को तलाश करने में काफ़ी दुशवारी हो रही है रोज़ाना तीन से चार मज़ारात पर ही हाज़िरी हो पाती है अगर यही हाल रहा तो कई महीने लग जाऐंगे। अब आप रहमतुल्लाह अलैह मुझे हिम्मत अता कीजिए और मददगार दीजिए वर्ना में कल से येह काम छोड़ रहा हूँ।

येह अर्ज़ करने के बाद मग़रिब की नमाज़ अदा की और नमाज़ अदा करने के बाद फ़ौरन एक शख़्स से मुलाक़ात हुई उसने कहा : मैंने आप को काफ़ी दूर से देखा तो मुलाक़ात के लिए चला आया, आप यहां किस लिए आए हैं ? मैंने उनको सारा हाल बताया, उन्होंने कहा: मैं आप को मज़ारों पर ले चलता हूँ। फिर उस दिन के बाद अल्लाह पाक के करम से कड़ी से कड़ी जुड़ती चली गई और मददगार मिलते रहे और एक एक

दिन में कभी दस कभी बारह औलियाए किराम की बारगाहों में हाज़िरी की सआदत मिलने लगी।

सैय्यिद अलाउद्दीन मज्ज़ूब रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



(13) मुहम्मद मुजाहिद शहीद

आप रहमतुल्लाह अलैह शुहदाए अकबराबाद के ज़ुमरे में हैं, 984 हिजरी ब मुताबिक़ 1576 ईस्वी में आप रहमतुल्लाह अलैह ने शहादत पाई।

मज़ार मुबारक मुहल्ला शाह विलायत नाई मंडी में मुत्तसिल दरगाह सैय्यिद अलाउद्दीन मज्ज़ूब रहमतुल्लाह अलैह एक गुंबद के अंदर वाक़ेअ है जो दारोगा आशिक़ अली साहिब की मिल्कियत में है, गुंबद के अंदर अब तावीज़ नदारद है और दरवाज़े भी बंद कर दिए गए हैं, अन्दर कलिमा तय्यिबा, अल्लाह, मुहम्मद और बैरूनी मेहराबों की पेशानी पर चूने में आयाते क़ुरआनी मनक़ूश यानी लिखी हुई हैं, जुनूबी पेशानी पर येह तारीख़ लिखी हुई है।

मुहम्मद मुजाहिद जवान हज़्बर
ज़ पीराने देरीं चू ऊ कस नदीद
गुरेज़ां शुदे रुस्तमे दास्ताँ
चे दर मारिका तेग़ कीं मी कशीद

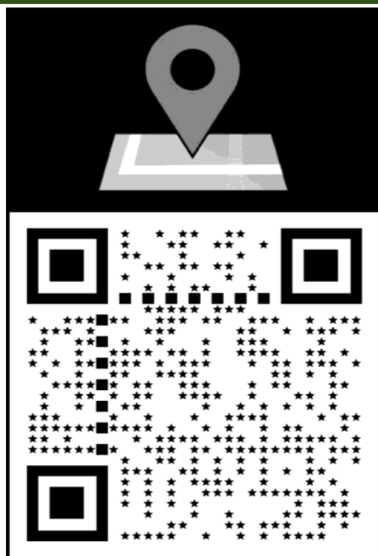
(बोस्ताने अख़्यार, पेज201.202)

मौजूदा हालत 2025

हज़रत मुजाहिद शहीद रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक अब भी हज़रत अलाउद्दीन मज्ज़ूब रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक के दक्खिन की जानिब एक गुंबद के अंदर मौजूद है। अब से दस बारह साल पहले इस मज़ार की ज़मीन एक सिंधी के क़ब्ज़े में थी, उसने मज़ार मुबारक को ख़त्म कर के अपना ऑफ़िस बना लिया था फिर एक मुस्लमान ने इस ज़मीन को ख़रीद कर अपने क़ब्ज़े में लिया और मज़ार मुबारक की तामीर करवाई मज़ार पर नाम व तारीख़ की तख़्ती नहीं लगी है और गुंबद के मेहराबों पर लिखी हुई इबारत भी अब नज़र नहीं आती।

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर जाने का रास्ता येह है कि ढाकरान क्रासिंग से सदर भट्टी वाले रोड पर जाएं कुछ दूर चलने के बाद उल्टे हाथ पर एक रोड अंदर बस्ती की जानिब जा रहा है इस रोड से अंदर जाएं और किसी से पूछ लें कि हज़रत अलाउद्दीन या विलायत शाह रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक कहाँ है ? हज़रत अलाउद्दीन रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर पहुंच कर दक्खिन जानिब देखें तो एक गुंबद नज़र आएगा, वहां मौजूद लोगों से उस गुंबद पर जाने का रास्ता पूछ लें और जा कर हाज़िरी की सआदत हासिल करें।

मुहम्मद मुजाहिद शहीद रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



कचहरी कलैक्ट्री

(14) आदम शाह

आप रहमतुल्लाह अलैह आगरा के पुराने बुज़ुर्गों में से हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** लबे सड़क यानी सड़क के किनारे रेलवे मुत्तसिल कचहरी कलैक्ट्री रेलवे पुल से मशरिक़ी यानी पूरब की जानिब वाक़ेअ है। (बोस्ताने अख्यार, पेज44)

मुहल्ला ढाकरान (नॉर्थ ईदगाह कॉलोनी)

(15) आग़ा सफ़दर ख़ां ग़ाज़ी यज़्दी

आप रहमतुल्लाह अलैह आलमगीर बादशाह के ज़माने में यज़्द से जो ईरान का मशहूर शहर है तशरीफ़ लाए थे, इल्म व फ़ज़्ल से मौसूफ़ और बड़े आरिफ़ कामिल बुज़ुर्ग थे, बादशाह ने आप रहमतुल्लाह अलैह को आगरा

की ईदगाह का ख़तीब मुक़र्रर किया था, आप रहमतुल्लाह अलैह के ख़ानदान में ख़िताबत का ओहदा अब तक क़ायम था, अब अगर्चे ईदगाह कमेटी लोकल एजेंटी के ज़ेरे ऐहतिमाम है। मगर आग़ा मिर्ज़ा को जो कलेक्टरी आगरा में अराइज़ नवेस और आप रहमतुल्लाह अलैह की नस्ल से हैं। कुछ वज़ीफ़ा अब तक मिलता है,

मज़ार मुबारक मुहल्ला धाकरान (नाई की मंडी) के क़रीब नाला के क़रीब वाक़ेअ और लोगों में नवाब अब्दुल शाह ग़ाज़ी के मज़ार के नाम से मौसूम है।

एक बुलंद लंबे चौड़े और पक्के चबूतरे पर मज़ार का गुंबद चार संगीन सतूनों पर क़ाईम है, चबूतरे पर कई नीम के दरख़्त साया किए हुए हैं। यहां का मंज़र निहायत दिलकश और ख़ुशनुमा और मज़ार से फ़ैज़ और बरकत के आसार ज़ाहिर हैं, ख़ुश अक़ीदा लोग पुराने बुख़ार के वास्ते यहां की ईंट उठा कर ले जाते हैं और बुखार सही होने के बाद मलीदा पर आप रहमतुल्लाह अलैह की नियाज़ दिलाते हैं। चबूतरे के आस पास में कई संगीन तावीज़ पड़े हैं। जिनमें पाँच तावीज़ों पर येह नाम लिखे हुए हैं:

(1) आक़ा मुहम्मद बाक़िर वल्द अली रज़ा,1096 हिजरी

(2) आक़ा मुहम्मद ताहिर वल्द आक़ा अली रज़ा

(3) मुहम्मद बाक़िर,1070 हिजरी

(4) असदुल्लाह उर्फ़ मिर्ज़ा दौला, 1093 हिजरी

(5) होरी बिंते सुल्तान मिर्ज़ा

इन नामों में पहले और दूसरे आप रहमतुल्लाह अलैह के भांजे और आलमगीर बादशाह के ज़माने के अमीर लोगों में से थे।

(बोस्ताने अख़्यार, पेज90.91)

मौजूदा हालत 2025

हज़रत आग़ा सफ़दर ख़ां ग़ाज़ी यज़्दी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर जाने का रास्ता येह है कि नाई की मंडी से सुंदर पाड़ा, नॉर्थ ईदगाह कॉलोनी की तरफ़ जाएं, इसी कॉलोनी में घरों के बीच में ऊंची जगह पर मज़ार मुबारक मौजूद है।

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार के नीचे एक और मज़ार है लेकिन कुछ पता नहीं चल सका कि वो किन का मज़ार है।

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार के पास आप रहमतुल्लाह अलैह के भाँजों की क़ब्रों के साथ मज़ीद तीन और क़ब्रें थीं लेकिन अब इन क़ब्रों को ख़त्म कर के उस जगह को मस्जिद में शामिल कर लिया गया है सिर्फ आप रहमतुल्लाह अलैह के पायँती एक क़ब्र अब भी मौजूद है।

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार के बग़ल में क़िब्ला की जानिब मस्जिद भी है। आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक गुंबद चार पिलरों पर क़ाइम है और अब पिलरों के दर्मियान की जगह को दीवार से बंद कर दिया गया है।

मज़ार मुबारक के पास ना अब कोई नीम का दरख़्त है और ना मज़ार मुबारक पर तख़्ती लगी है, जिसकी वजह से हमें भी तलाश करने और आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की पहचान करने में काफ़ी दुशवारी हुई लेकिन अल्लाह पाक के करम से पहचान हो गई।

आज कल लोग आप रहमतुल्लाह अलैह को अब्दुल्लाह ग़ाज़ी के नाम से जानते और पहचानते हैं।

आप रहमतुल्लाह अलैह का उर्स सैय्यिदुना सरकार हज़रत सैय्यिद अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के उर्स के एक हफ़्ते बाद यानी 13,14 सफ़र को होता है। मज़ार मुबारक की देख भाल करने वालों ने बताया कि

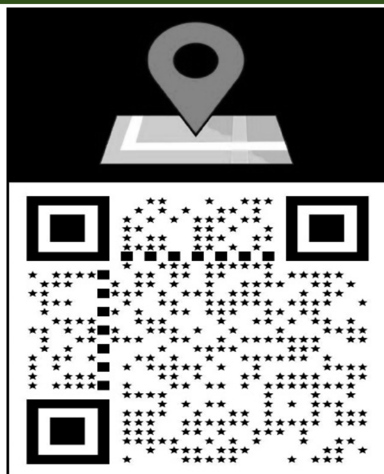
दस, बारह साल पहले आप रहमतुल्लाह अलैह का उर्स तीन दिन तक काफ़ी शानो शौकत के साथ मनाया जाता था और आशिक़ाने औलिया बड़ी तादाद में शिरकत भी करते थे लेकिन अब चंद लोगों के सिवा कोई नहीं आता और अब सिर्फ 13 सफ़र को अस्र से मग़रिब तक फ़ातिहा ख़्वानी वग़ैरा कर ली जाती है।

ऐ आशिक़ाने औलिया! सुना आपने, येह हालत सिर्फ एक मज़ार की नहीं बल्कि येह हालत आगरा के कई मज़ारों की है कि पहले काफ़ी शानो शौकत के साथ उर्स होता था लेकिन अब नहीं होता और कहीं होता भी है तो मुख़्तसर सा।

सगे अत्तार (अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ अत्तारी मदनी फ़तेहपुरी) की दिली ख़्वाहिश है कि काश! आगरा में आशिक़ाने औलिया की एक कमेटी बन जाये और उनका काम ही यही हो कि जिस बुज़ुर्ग के उर्स की तारीख़ आए, उस इलाक़े वालों से राबिता कर के उनका उर्स धूम धाम से मनाएं। इसी लिए इस किताब के आख़िर में आगरा के औलियाए किराम के उर्स की तारीख़ महीने के ऐतिबार से लिख दी गई है ताकि हमें मालूम हो सके कि किस महीने में कितने औलियाए किराम का उर्स है।

अल्हम्दु लिल्लाह! मुझे येह कलिमात लिखते हुए काफ़ी फ़ख़र महसूस हो रहा है कि आशिक़ाने औलिया की दीनी तहरीक दावते इस्लामी ने एक शोबा इस काम के लिए **'मज़ाराते औलिया'** के नाम से बना दिया है जिसका काम शरीअत के मुताबिक़ उर्स के तमाम काम अंजाम देना और हाज़िरीन को सहूलियात फ़राहम करना है, लिहाज़ा आप सब मिलकर इस शोबे का साथ दें ताकि आगरा के हर बुज़ुर्ग का उर्स शानो शौकत के साथ किया जा सके। साथ देने के लिए **(8808693818)** पर राबिता करें।

आगा सफ़दर खां गाज़ी यज़्दी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



नूरी दरवाज़ा

(16) हाफ़िज़ अहमद

आप रहमतुल्लाह अलैह हाफ़िज़े क़ुरआन और अकबराबाद के नेक लोगों में से हैं, मुहल्ला नूरी दरवाज़ा में आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** मस्जिद के क़रीब वाक़ेअ है जिसके दालान पर येह इबारत लिखी हुई है: हाफ़िज़ अहमद वक़्फ़ कर्द याज़दह दर काकीन दद्दू क़ित्आ बाग़ सी बीगा हुसूल आन जिहत ख़र्च मस्जिद व मजलिस फ़ुक़रा। 1151हिजरी। (बोस्ताने अख्यार, पेज40.41)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के

ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

(17) **क़ारी हाफ़िज़ जाफ़र अली**

आप रहमतुल्लाह अलैह आगरा के एक साहिबे तक़्वा और निहायत नेक और बाबरकत बुज़ुर्ग थे मुहल्ला नूरी दरवाज़ा आप रहमतुल्लाह अलैह का मस्कन था, जहां अब तक आप रहमतुल्लाह अलैह की औलाद आबाद है, मौलवी मुहम्मद अमीनुद्दीन साहिब फ़ारूक़ी वकील आगरा ने आप रहमतुल्लाह अलैह के बहुत से औसाफ़े हमीदा और अख्लाक़े पसंदीदा बयान फ़रमाए हैं।

क़िराअत और क़ुरआन ख्वानी में कमाल हासिल था, अज़ान इस ख़ुश इल्हानी से देते थे कि तेरहवीं सदी के बिलाल समझे जाते थे, अक्सर लोग जिन्होंने लड़कपन में आप रहमतुल्लाह अलैह की अज़ान को सुना है बयान करते हैं कि जुमा के दिन जबकि आप रहमतुल्लाह अलैह जामा मस्जिद में अज़ान दिया करते थे बहुत से लोग महेज़ आप रहमतुल्लाह अलैह की अज़ान सुनने के वास्ते पहले से आकर इंतिज़ार में बैठ जाते थे, जिस वक़्त आप रहमतुल्लाह अलैह अज़ान देते सब पर एक वज्द की हालत तारी हो जाती थी।

(बोस्ताने अख्यार, पेज63)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

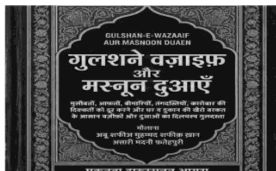
मुसन्निफ़ की किताबों का तआरुफ़

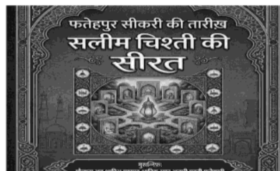
स	किताब का नाम	ज़बान	पेज
1	दीने इस्लाम की खूबियाँ	उर्दू	80
2	दीने इस्लाम की खूबियाँ	हिन्दी	80
3	असरारूल ईमान फ़ी हकाईकुल अरकान	उर्दू	423
4	असरारूल ईमान फ़ी हकाईकुल अरकान	हिन्दी	423
5	मेरी सुन्नत मेरी उम्मत	उर्दू	231
6	मेरी सुन्नत मेरी उम्मत	हिन्दी	231
7	क्या हाल है ?	उर्दू	220
8	क्या हाल है ?	हिन्दी	220
9	मौत के वक़्त	उर्दू	282
10	मौत के वक़्त	हिन्दी	282
11	अकाइद की हिकमतें	उर्दू	153
12	अकाइद की हिकमतें	हिन्दी	153
13	पाँच नमाजों की हिकमत	उर्दू	152
14	पाँच नमाजों की हिकमत	हिन्दी	152
15	सब से पहले सब से आखिर	उर्दू	276
16	सब से पहले सब से आखिर	हिन्दी	276
17	क़ुसूर किस का ?	उर्दू	64
18	क़ुसूर किस का ?	हिन्दी	64
19	निसाब मसाइले नमाज़	उर्दू	80
20	आसान हनफ़ी नमाज़	हिन्दी	96
21	आसान फ़र्ज़ उलूम	उर्दू	696
22	आसान फ़र्ज़ उलूम	हिन्दी	696
23	आसान खुत्बाते मुहर्रम	उर्दू	720

24	आसान खुत्बाते मुहर्रम	हिन्दी	720
25	आला हज़रत का चर्चा रहेगा	उर्दू	32
26	आला हज़रत का चर्चा रहेगा	हिन्दी	32
27	ईद मीलादुन्नबी क्यों और कैसे ?	उर्दू	165
28	ईद मीलादुन्नबी क्यों और कैसे ?	हिन्दी	165
29	मुहम्मद और अहमद के राज़	उर्दू	160
30	मुहम्मद और अहमद के राज़	हिन्दी	128
31	मदीने जाना क्यों ज़रूरी है ?	उर्दू	276
32	मदीने जाना क्यों ज़रूरी है ?	हिन्दी	276
33	चाँद की गवाही	उर्दू	64
34	चाँद की गवाही	हिन्दी	64
35	कुर्बानी की तारीख और हिकमतें	उर्दू	112
36	कुर्बानी की तारीख और हिकमतें	हिन्दी	112
37	आँखों का तारा नामे मुहम्मद	उर्दू	176
38	आँखों का तारा नामे मुहम्मद	हिन्दी	160
39	आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत	उर्दू	592
40	आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	608
41	फतेहपुर सीकरी की तारीख	उर्दू	208
42	फतेहपुर सीकरी की तारीख	हिन्दी	208
43	आगरा की तारीख	उर्दू	400
44	आगरा की तारीख	हिन्दी	400
45	हिन्दुस्तान को मुस्लिम बादशाहों के तोहफे	उर्दू	208
46	हिन्दुस्तान को मुस्लिम बादशाहों के तोहफे	हिन्दी	208
47	शबान और शबे बराअत	उर्दू	50
48	शबान और शबे बराअत	हिन्दी	50
49	कुरआनी सूरतों के मज़ामीन	उर्दू	435

50	खुत्बाते शफ़ीकी जिल्द 1	उर्दू	477
51	खुत्बाते मुस्तफाई व खुत्बाते शफ़ीकी जिल्द 1	उर्दू	464
52	खुत्बाते मुस्तफाई व खुत्बाते शफ़ीकी जिल्द 2	उर्दू	382
53	खुत्बाते मुस्तफाई व खुत्बाते शफ़ीकी जिल्द 3	उर्दू	382
54	तदरीस के 26 तरीक़े	उर्दू	400
55	रफीकुत्तदरीस	उर्दू	376
56	तारीख साज़ शख्सियत बनने के फॉर्मूले	उर्दू	135
57	फैज़ाने कुरआन कोर्स	उर्दू	256
58	फैज़ाने शरीअत कोर्स	उर्दू	700
59	मा फ़्आलल्लाहु बिका	उर्दू	288
60	तन्ज़ीमी निसाब व बयानात	उर्दू	528
61	उम्मते मुहम्मदिया के सुवालात	उर्दू	145
62	दुरूद की हिकमतें	उर्दू	98
63	चन्दा करने के फॉर्मूले	उर्दू	147
64	शफीकुल मिस्बाह शरह मराहुल अरवाह	उर्दू	402
65	शफ़ीकिया शरह अरबइने नवाविया	उर्दू	190
66	शाफ़िकुन्नहव लिहल्लि खुलासतुन्नहव हिस्सा1	उर्दू	200
67	शाफ़िकुन्नहव लिहल्लि खुलासतुन्नहव हिस्सा2	उर्दू	200
68	अल कौलुल अज़हर शरह फ़िक़्हे अकबर	उर्दू	192
69	शारीकुल फलाह शरह नूरुल इज़ाह	उर्दू	717
70	खलीलिया शरह मुनाज़रा रशिदिया	उर्दू	300
71	कलामुल विकाया शरह शरहुल विकाया जिल्द1	उर्दू	372
72	सर्फ के दिलचस्प सुवालात	उर्दू	375
73	गुलशने वजाइफ़	उर्दू	64
74	इफ़्तिखारे नक़िय्यह अल मारुफ़ फ़र्ज़नदाने आगरा	उर्दू	300
75	खत्मे कुरआन की फ़ज़ीलत और मसाइल	उर्दू	32

76	[redacted]		
77	ताजगंज के 12 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	48
78	लोहामंडी के 12 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	48
79	हींगमंडी और नाईमंडी के 17 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	64
80	सिकंदरा व अतराफ़ के 14 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	32
81	सराये ख्वाजा व अतराफ़ के 6 औलिया की सीरत	हिन्दी	32
82	शाहगंज व अतराफ़ के 13 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	32
83	बेलनगंज व अतराफ़ के 29 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	64
84	नई बस्ती व दीवान खाना के 8 औलिया की सीरत	हिन्दी	48
85	कब्रिस्तान पीर गीलानी के 5 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	32
86	कब्रिस्तान पंचकुइयां के 8 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	32
87	आगरा के गौस और 8 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	32
88	जमना पार आगरा के 12 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	32
89	मिर्ज़ा खानदान के 4 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	32
90	तज़क्कुरे विसाल औलिया का विसाल दर महीना व साल	उर्दु	514
91	हर्फ़ों के राज़	उर्दु	200



















اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ اللَّطِيْف وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِهِ الشَّفِيْق   اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी, मुहम्मदे अरबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के **1500 सालह जशने विलादत** के मौक़े पर **“मुहम्मद”** और **“अहमद”** नाम की ला जवाब तशरीह पर मुश्तमिल आशिकाने रसूल के लिए

एक नायाब तोहफा बनाम

मुहम्मद और अहमद के राज़

आप इस किताब में पढ़ सकेंगे

दुरूद शरीफ़ की अनोखी फ़ज़ीलत	अल्लाह पाक के3000 नाम
हुज़ूरﷺ के1400 नाम	मुहम्मद ﷺ अल्लाह के मज़हर हैं
अहमद के अलिफ़ की हिक्मत	मुहम्मद के मीम की हिक्मत
नामे मुहम्मद नामे अल्लाह का मज़हर	चार हर्फ़ लाने की हिक्मत
नबी के नाम में कोई नुक़्ता ना होने की हिक्मत	ज़ेर की हरकत ना होने की हिक्मत
मुशद्दद हर्फ़ लाने की हिक्मत	मुशद्दद हर्फ़ को दो बार पढ़ने की हिक्मत
हर्फ़े मीम को ही मुशद्दद लाने की हिक्मत	अल्लाह कहने में होंठ ना मिलने की हिक्मत
मुहम्मद कहने में होंठ मिलने की हिक्मत	मुहम्मद कहने में दो बार होंठ मिलने की हिक्मत
सारी कायनात की कुंजी नामे मुहम्मद	9 की चार अजीब बातें
सिफ़ाते मुहम्मद सिफ़ाते ख़ुदा का मज़हर	अफआले मुहम्मद अफआले ख़ुदा का मज़हर
हर चीज़ में मुहम्मदﷺ का नाम कैसे है ?	ख़साइसे मुस्तफ़ाﷺ कितने हैं ?
अहमद नाम रखने की हिक्मत	मुहम्मद नाम रखने की हिक्मत
आसमान में अहमद, ज़मीन में मुहम्मद नाम रखने की हिक्मत	मुहम्मद और अहमद के अदद की हिक्मत
मुहम्मद के हर हर्फ़ की जुदा हिकमतें	मुहम्मद में दो मीम लाने की हिक्मत
मुहम्मदﷺ के दुनिया की जान होने की हिक्मत	शाने मुस्तफा का बयान क़ुरआनो हदीस से
मीलाद नामा	कलामो सलाम

मुसन्निफ़

मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फ़तेहपुरी

मकतबा दारुस्सुन्ना आगरा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ اللَّطِيْف وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِهِ الشَّفِيْق اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم

मकतबा दारुस्सुन्ना की जानिब से घर घर दीन की तालीम पहुंचाने, दीनी जानकारी को आम करने और मुसलमानों के दिलो में नबी ﷺ का इश्क़ पैदा करने और सुन्नतों का आमिल बनाने की पहली कोशिश बनाम :

आँखों का तारा

नामे मुहम्मद

आप इस किताब में पढ़ सकेंगे

* दीन सीखो इनआम पाओ
* मकतबा दारुस्सुन्ना आगरा और दीन की खिदमत
* तकरीज़े जमील
* मुसन्निफ़ का तआरूफ
* आँखों का तारा नामे मुहम्मद
* दुरूद शरीफ कि अनोखी फ़ज़ीलत
* मुहब्बत और इश्क़ में फर्क़
* नबी ﷺ से मुहब्बत करने की मिसाल
* इश्क़े रसूल ﷺ के फवाइद
* सहाबए किराम का अंदाज़े इश्क़
* मुस्तफ़ा ﷺ ईमान की जान हैं
* हुज़ूर ﷺ के आशिक़ तमाम मख्लूक़ है
* इश्क़े रसूल की निशानियां
* सुन्नतों पर अमल का सवाब
* प्यारे नबी की प्यारी सुन्नतें
* कलाम व सलाम

मुसन्निफ़

मौलाना अबू शफीअ मुहम्मद शफीक़ खान अत्तारी मदनी फतेहपुरी

मकतबा दरुस्सुन्ना आगरा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ اللَّطِيْف وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِهِ الشَّفِيْق

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم

اَلصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَ اَصْحَابِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

दिलचस्प मालूमात का एक अछूता अंदाज़ “सब से पहले फुलां काम किसने किया?” पर मुश्तमिल किताब बनाम

सबसे पहले सबसे आखिर

आप इस किताब में पढ़ सकेंगे

* सबसे पहले किसने मिम्बर पर खुत्बा दिया ?
* सबसे पहले किसने राहे खुदा में जिहाद किया ?
* सबसे पहले किसने सरीद तैयार किया ?
* सबसे पहले किसने तराज़ू बनाया ?
* सबसे पहले किसने हथियार बनाये ?
* सबसे पहले किसने इस्लाम में मस्जिद बनाई ?
* सबसे पहले इस्लाम में सूली किस को दी गई ?
* सबसे पहले इस्लाम में खुत्बा कौन सा पढ़ा गया ?
* सबसे पहले किसने ताजे शाही अपने सर पर रखा ?
* सबसे पहले किसने मूंछ के बाल तराशे ?
* सबसे पहले किसने सूफ का लिबास पहना ?
* सबसे पहले किसने क़लम से लिखा ?

मुसन्निफ़

मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फ़तेहपुरी

मकतबा दारुस्सुन्ना देहली

सर ज़मीने आगरा पर औलिया कितने ही हैं

आओ तुम को मैं बताऊं अस्फ़िया कितने ही हैं
सर ज़मीने आगरा पर औलिया कितने ही हैं
जल्वए नूरे ख़ुदा की हर तरफ़ देखी ज़िया
चार सू रौशन चिराग़े पुर ज़िया कितने ही हैं
गिनते गिनते थक ना जाएं येह तुम्हारी उंगलियां
जा बजा वो बंदगाने किबरिया कितने ही हैं
ख़ानवादए क़ादरिया से मदारी फ़ैज़ तक
हर तरफ़ जलवा कुनां वो बा सफ़ा कितने ही हैं
कादरी चिश्ती सुहर्वर्दी मदारी सिल्सिले
बाग़ ऐसे खिलखिलाते ख़ुशनुमा कितने ही हैं
जाने किस किस दर से मिलती है यहां पर राहतें
रहमतों के दर खुले मरहबा कितने ही हैं
औलिया की महफ़िलों में है सुकूं का तज़्किरा
आशिक़ी के दायरे में आशना कितने ही हैं
उनके दर की ख़ाक सर पर मल रहे हैं बादशाह
उनकी महफ़िल में झुके अहले हया कितने ही हैं
जाहो मन्सब छोड़ बैठे उनके दर की ख़ाक पर
फ़ैज़ लेते हैं यहां अहले दुआ कितने ही हैं
एक तू क्या है तेरी औक़ात क्या बेख़ुद रज़ा
उनकी बज़्मे इश्क़ में नग़मा सरा कितने ही हैं

शायर :वसीम बेख़ुद मांडलवी भीलवाड़ा राजिस्थान

बोस्ताने ख़ैर ला कर बोस्ताँ महका दिया

बोस्ताने ख़ैर ला कर बोस्ताँ महका दिया
अहले सुन्नत के अकीदे को बड़ा चमका दिया

भूल बैठे दौलते दुनिया के चक्कर में जिन्हें
उन बुज़ुर्गों का तआरुफ़ आप ने करवा दिया

आगरा वालों पे हज़रत का बड़ा ऐहसान है
रब ने उनके हाथ से सच का अलम लहरा दिया

निस्बते मदनी से यूँ तो जल रहे थे पेशतर
और क़लम ने फिर जलन को और भी भड़का दिया

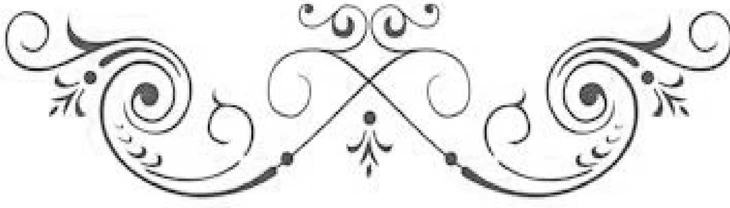
हक़ लिखा, बेबाक लिखा, ख़ौफ़े बातिल कुछ ना था
सच के शोअलों से हर इक फ़ितने को यूँ धमका दिया

इस शफ़ीक़े क़ादरी का रख तरो ताज़ा क़लम
जिस ने भूले रास्तों को रास्ते पे ला दिया

कब किसी मंसब की चाहत, कब सिले की आरज़ू
सिर्फ़ निस्बत ने येह सारा काम ही करवा दिया

जम रही थी धूल माज़ी के तख़य्युल की मगर
किस ने बेख़ुद आगरा को आईना दिखला दिया

शायर : वसीम बेख़ुद मांडलवी भीलवाड़ा राजिस्थान



आओ दुनिया को बताएं खूबियाँ इस्लाम की

आओ दुनिया को बताएं खूबियाँ इस्लाम की
ज़िंदगी भर काम आएं खूबियाँ इस्लाम की

अदल है, इन्साफ़ है, उल्फ़त, रहम की बात है
किस तरह कोई मिटाए खूबियाँ इस्लाम की

दूर से ही रुख से तेरे सुन्नतें छलका करें
पैरहन में मुस्कराए खूबियाँ इस्लाम की

कुफ्र की ज़ुल्मत में डूबा जिस जगह इंसान हो
उस जगह फिर जगमगाए खूबियाँ इस्लाम की

नूर बन कर दिल में उतरेगी उसी की बात फिर
जो कोई अपनाते जाए खूबियाँ इस्लाम की

क़ौम की तक़दीर बन जाते हैं वो माँ बाप जो
अपने बच्चों को सिखाएं खूबियाँ इस्लाम की

येह फ़रीज़ा है हमारा, दीन का फ़रमान भी
हर कदम अपनाते जाएं खूबियाँ इस्लाम की

इस तरह बतलाओ बेख़ुद, अपने तो अपने मगर
ग़ैर भी फिर जान जाएं खूबियाँ इस्लाम की

वसीम बेखुद माण्डलवी राजस्थान



फेहरिस्त

मुसन्निफ़ का तआरुफ़... *3*

नाम और निस्बत 3

दीनी माहौल से वाबस्तगी और सफ़रे इल्म 3

तदरीसो तसनीफ़ की शुरुआत 4

खिलाफ़तो इजाज़त 5

खिदमते दीन... 5

मज़ारात पर हाज़िरी का तरीक़ा... *6*

आगरा के औलिया का मुख्तसर तआरुफ़... *7*

ख़ानवादए चिश्तिया के बुज़ुर्गाने दीन... 8

ख़ानवादए नक़्शबंदिया के बुज़ुर्गाने दीन 8

ख़ानवादाए शत्तारिया के बुज़ुर्गाने दीन... 9

ख़ानवादए मदारिया के बुज़ुर्गाने दीन... 9

आगरा शहर का आबाद होना 10

सुल्तान सिकन्दर लोदी के ज़माने में औलिया की आमद 11

दसवीं सदी हिज्री के औलियाए आगरा... 11

ग्यारहवीं सदी हिज्री के औलियाए आगरा 12

बारहवीं सदी हिज्री के औलियाए आगरा 12

तेरहवीं और चौदहवीं सदी हिज्री के औलियाए आगरा 14

आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत... *15*

सदक़ए जारिया का बेहतरीन मौक़ा 17

हींगमंडी और नईमंडी के 17 औलियाए किराम की प्यारी सीरत.................... *18*

हींग मंडी.. *18*

(1) शैख़ फ़तहुल्लाह 18

(2) शैख़ आरिफ़ हुसैनी (मीराँ आरिफ़ हुसैनी)......................................19

(3) शैख़ कमाल..22

(4) शैख़ मुहम्मदी चिश्ती साबरी 24

(5) मलंग शाह..28

सेब का बाज़ार... *29*

(6) शैख़ बुढढन शत्तारी...29

नाई की मंडी... *31*

(7) सैय्यिद हुसैन शहीद 31

(8) सैय्यिद कमाल शहीद 32

(9) हांडी मौक़ूफ़ शाह...32

(10) हाथी शाह 35

(11) अब्दुल्लाह..36

(12) सैय्यिद अलाउद्दीन मज्ज़ूब...36

(13) मुहम्मद मुजाहिद शहीद 43

कचहरी कलैक्ट्री *45*

(14) आदम शाह 45

मुहल्ला ढाकरान (नॉर्थ ईदगाह कॉलोनी).. *45*

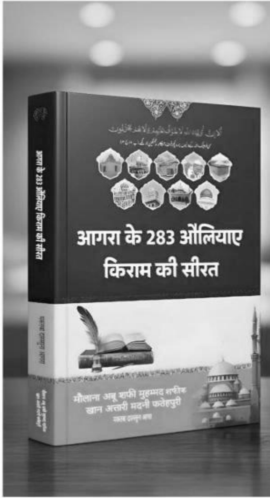
(15) आग़ा सफ़दर ख़ां ग़ाज़ी यज़्दी...45

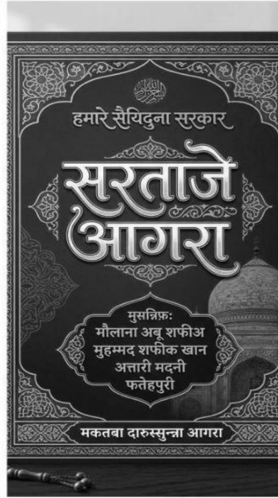
नूरी दरवाज़ा *49*

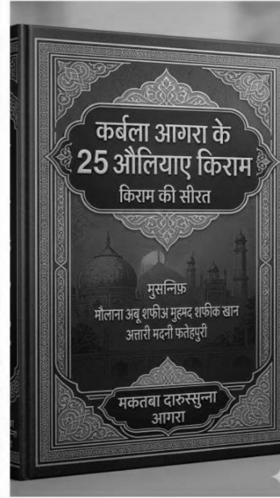
(16) हाफ़िज़ अहमद 49

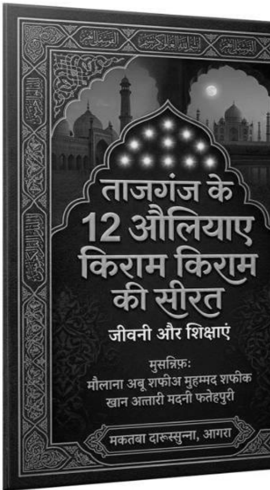
(17) क़ारी हाफ़िज़ जाफ़र अली 50

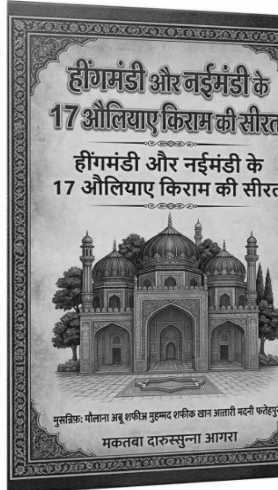
मुसन्निफ़ की किताबों का तआरुफ़ 51

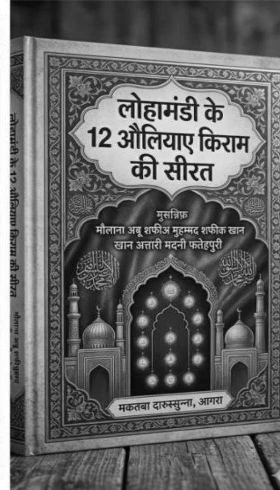












याद दाश्त

स	उनवान	पेज
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		